मरूधरा क्षेत्र के प्रमुख
जैन श्वेताम्बर व अन्य मंदिर

नवपद ओली आराधना,
आत्म विज्ञान एवं
अन्य महत्वपूर्ण जानकारियाँ

संकलन, लेखक, प्रधान सम्पादन
मोहनलाल बोल्या
37, शान्ति निकेतन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड
उदयपुर-313001 (राज.)
मोबाइल : 94613 84906

संपादक एवं संशोधक
हरकलाल पामेचा
नीम का चौक, देलवाड़ा-313202
जिला राजसमन्द (राज.), मो. 94685 79070

लेखक, संकलक
एवं प्रकाशक :
मोहनलाल बोल्या
37, शांति निकेतन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड़,
उदयपुर (राजस्थान)
मोबाइल : 94613 84906

सम्पादक एवं संशोधक :
हरकलाल पामेचा
देलवाड़ा (राज.)
मोबाइल : 94685 79070

डिजाइनिंग एवं प्रिन्टिंग :
मल्टी वेव ग्राफिक्स
सुमन ड्राईक्लिनर्स के ऊपर,
50, कोलीवाड़ा, बापू बाजार,
रावत बुक स्टोर गली, उदयपुर (राज.)
मोबाइल : 98292 44710
ई-मेल : multiwavegraphics@gmail.com

प्रकाशन वर्ष :
2021

मूल्य :
500/- रूपये

2850 वर्ष प्राचीन
श्री अहिच्छत्रा पार्श्वनाथ भगवान
अहिच्छत्रानगरी (कमठ उपसर्ग भूमि)

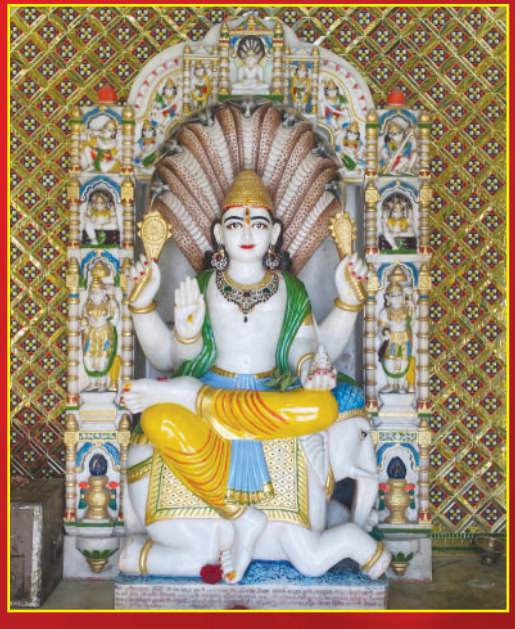

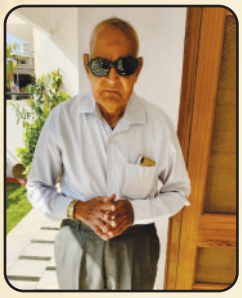

।। ऊँ श्री महावीराय नमः ।।

नान्दीयां तीर्थाधिपति जीवित भगवान महावीर स्वामी

इसकी विशेषता परिकर में 52 प्रतिमा है।

संकलन, लेखक, प्रधान सम्पादन

मोहनलाल बोल्या

37, शान्ति निकेतन कॉलोनी, बेदला-बड़गांव लिंक रोड

उदयपुर-313011 (राज.), मोबाइल : 94613 84906

श्री गज मंदिर, ऋषभदेव (केसरिया जी)

सम्पर्क : 94134 67651

ऋषभदेव उदयपुर से 65 किलोमीटर दूर उदयपुर-अहमदाबाद रोड पर स्थित है। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। केसरियाजी मंदिर मुख्य आकर्षण पहले जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का मंदिर है।

स्थानीय भील भी 'केसरियाजी' देवता की पूजा करते हैं। यहां स्थित धर्मशाला में 165 कमरे हैं जिसमें से 65 AC कमरे हैं। मंदिर सफेद संगमरमर पत्थर से बना हुआ है। गज मंदिर में प्रतिमा जी ग्रेनाईट पत्थर से बनी हुई है जो दर्शनीय एवं अति मनभावन प्रतिमा है।

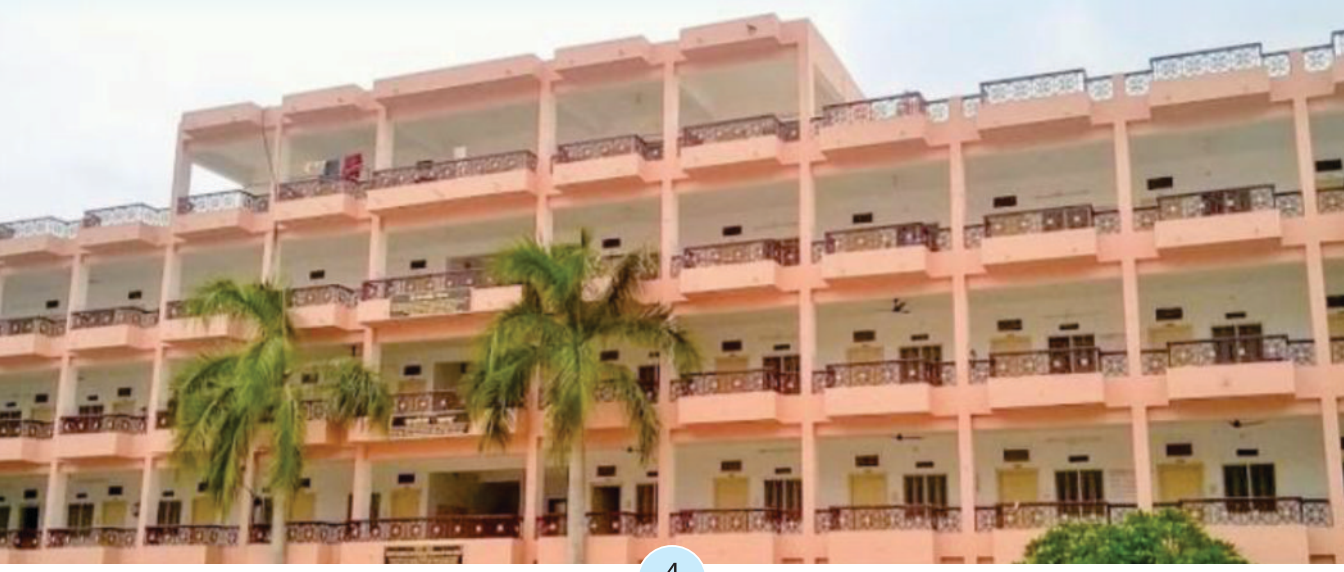

नवकार मंत्र किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित नहीं है परन्तु यह श्रेष्ठ गुणों के प्रति आदरभाव है इसमें किसी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, देश अथवा महाद्वीप के प्रति भी कोई भी भेदभाव नहीं है। यह तो सम्पूर्ण गुणों की पुजा है न कि किसी व्यक्ति में नवकार मंत्र के गुण विद्यमान है तो वह सम्मानीय तथा वन्दनीय है। चाहे वह जैन, बुद्ध, ईसाई, हिन्दु या अन्य किसी धर्म का अनुयायी ही क्यों न हो

समर्पण : परम उपकारी गुरूदेवों को समर्पित

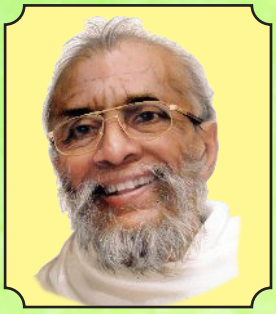

प्राचीन शास्त्रोद्धारक देशनादक्ष
आचार्यदेव विजय
श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

वर्द्धमान तपोनिधि आचार्यदेव
श्री विजय कल्याणबोधि
सूरीश्वर जी म.सा.

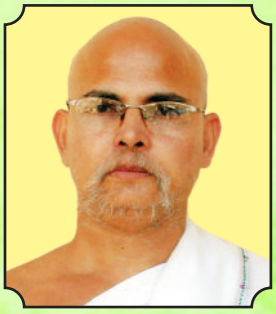

आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीश्वर जी
म.सा. के सुशिष्य प्रन्यास प्रवर
श्री अपराजित विजय जी म.सा.

आपकी प्रेरणा व उपदेशों से प्रकाशन हेतु पूर्ण आर्थिक सहयोग मिला..
आभार...अभिवन्दन...

सिद्धहस्त लेखक आचार्य विजय
श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.

सिद्ध हस्त लेखक आचार्यश्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.,
आचार्य श्री युगचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा., प्रन्यास प्रवर श्री मुक्तिश्रमण विजयजी म.सा.

आप द्वारा आवश्यकतानुसार संदर्भित पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई, जिससे हमें पुस्तक लेखन कार्य में अप्रत्याशित सहयोग मिला, एतदर्थ.....आपश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता.....

प्रेरक – सहयोगी

श्रीमती सुशीला बोल्या
लेखक पत्नी

श्रीमती नीरू पत्नी राजेन्द्र बोल्या
लेखक सुपुत्री

आशीर्वचन

आचार्य विजय हेमचंद्र सूरीश्वर जी

मोहनलाल बोल्या जी साहित्य रसक है। स्वाध्याय उनका श्वास–प्राण रहा है। संशोधन से प्रति रूचि ही उनका जीवन है। बुजुर्ग शरीर है, मन हमेशा युवान है। आँखों की रोशनी कम होती है, अंदर की रोशनी कभी कम नहीं होती। यदि सच्चे मन से काम करना है तो दुनिया की कोई ताकत रूकावट पैदा नहीं कर सकती।

बुजुर्ग होने पर भी संशोधन–प्रकाशन कार्य करते रहने का उनका हौंसला बेमिसाल है। उनकी कार्य सिद्धि को एक अजुबा भी कह सकते हैं। मरूधर के प्रमुख जैन श्वेताम्बर व अन्य मंदिरों का पूर्णरूप से संशोधन करना, मंदिर एवं प्रतिमा जी का समय तय करना, फोटो खींचवाना, स्वयं जाकर बारीकी से निरीक्षण करना, विवेचन लिखना, छपवाना, यह सब कार्य आसान नहीं है। साथ–साथ नवपद ओली जी की आराधना का विवरण करना।, साथ–साथ आत्मा का विज्ञान व अन्य महत्वपूर्ण जानकारियों का विवेचन करना, यह सब आपकी साहित्य रूचि और ज्ञान पिपासु को ज्ञान परोसने की करूणा का सुचक है। बुजुर्गवय, आँखों की रोशनी की कमी होने के बावजूद भी साहित्य सर्जन करते रहने का इतना उमंग वाकई में अनुमोदनीय है।

ऐसी स्वाध्याय की लगन आत्मा को केवलज्ञान के निकट पहुंचाती है। मोहनलाल जी शेष आयुष्य ऐसी साहित्य सेवा में व्यतीत करे। जिन शासन को उनकी शक्ति का लाभ मिलता रहे यही मंगल कामना..

आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरी जी महाराज सा. धर्म लाभ

विजय कल्याणबोधिसूरि

दि. 02.04.2021, अहमदाबाद

आशीष–वचन

पं. प्रवर श्री अपराजित विजय जी म.सा.

सुश्रावक श्री मोहनलाल बोल्या, धर्मलाभ।

आपका व हमारा परिचय 20 वर्ष पूर्व, आपकी पुस्तक उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर की पुस्तक के माध्यम से हुआ जो निरन्तर बढ़ता ही गया। आपने सम्पूर्ण मेवाड़–वागड़ व सिरोही के जैन मंदिर के इतिहास पुस्तक के माध्यम से बताए, बाद में चौबीस तीर्थंकर, नवकार–मंत्र, मौन साधना, आगम आदि के बारे में सरल भाषा में समझाया जो अनुमोदनीय है। इसके अतिरिक्त 'जिन दिग्दर्शन–प्रभु आपके द्वार' में सभी तीर्थों की प्रतिमाओं के चित्र प्रदर्शित किए जिससे बुजुर्ग लोग घर पर रहते हुए भाव दर्शन कर अपने आप धन्य हो जाते हैं। यह पुस्तक मुम्बई के थाणा, बोरीवली व अन्य कई स्थानों में लोगों द्वारा देखी गई।

आप द्वारा अब जैसलमेर के प्रमुख जैन मंदिरों के इतिहास, नवकार ओली आराधना व 'आत्म विज्ञान' सहित पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे हैं, यह एक अनोखी पुस्तक होगी। आप द्वारा जैन वास्तुकला, चित्रकला के साथ मन्दिरों का इतिहास मय चित्रों के दिए वास्तव में मन को छू जाते हैं। एक ही पुस्तक में विस्तार से शिक्षा मिलेगी, ऐसी आशा है। इसके अतिरिक्त आत्म विज्ञान पर प्रकाश डाला है, जो जैन धर्म का प्रमुख मात्र है।

उम्र के साथ नैत्र ज्योति कम होने के बावजूद साहित्य सृजन करते रहने की उमंग वाकई में अनुमोदनीय है। आगम, चौबीस तीर्थंकर, जिन–दिग्दर्शन आदि पुस्तकों का संकलन, लेखन कार्य इतना सरल नहीं है, यह सब आपका साहित्य रूचि और ध्यान का सूचक है। यह शासनदेव की सहायता से संभव हो सका, वे हमेशा आपके साथ है, ऐसी मान्यता है और आपकी दीर्घायु व मंगल कामना के साथ..

मोहनलाल जी शोध अनुसंधान से जिन शासन सेवा करते हुए भावी जीवन से व्यतीत करें।

अपराजित विजय जी म.सा.

आशीर्वचन

श्रीमद विजय पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.

आचार्य श्री युगचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.

श्रावक श्रेष्ठ, प्राचीन इतिहासविद, मोहनलाल जी बोल्या, योग धर्मलाभ।

वृद्ध होते हुए आंखों की तकलीफ होने पर भी आपकी ऋतोपासना चालू है, यह जानकर खूब–खूब अनुमोदना। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि ऐतिहासिक अन्य किताबों का अध्ययन कर, संपादन–प्रकाशन करना प्रंशसनीय है। नवपद, राजस्थान, मारवाड़ के जिनालयों और खासकर जैसलमेर के जिनालयों के साथ संशोधनात्मक पुस्तक तैयार कर रहे हैं जो अत्यन्त ही आनंद का विषय है, जिसकी अनुमोदना ।

आज तक आपके द्वारा आपके द्वारा आलेखित– प्रकाशित पुस्तकों के मुख्य विषय शिलालेखों, जिनालय, संबंधित इतिहास, प्राचीनता और प्रतिमा जी के फोटो हैं, साथ ही नियमित लेखनकर्ता के इन पुस्तकों के विषय को लोगों ने पसंद किया, यह सकल संघ के ऊपर उपकार रहेगा, ऐसा विश्वास है। वयोवृद्धता, स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के साथ आंखों की तकलीफ सहकर, साहित्य की उपासना करते हुए अविरल कार्य करते हुए आगम को बढ़ा रहे हैं जिसकी अनुमोदना। मुनिश्री के श्रुतवार आगम छपवाने में अंकिचित सौभाग्य मिला है, इस सौभाग्य को और अधिक सफल बनाने हेतु कल्याण कामना

विक्रम संवत 2077, चैत्र सुदी 1
13.4.2021, मंगलवार

आचार्य विजय पूर्णचन्द्र सूरि
प्रवचनश्रुत तीर्थ, शंखेश्वर

आशीष–वचन

पूज्य पूण्यकीर्ति सूरी जी. म.सा.

प्रभु दर्शन के अभिलाषी, तीर्थ प्रेमी, तीर्थ मार्गदर्शक

श्रेष्ठीवर्य बोल्या साहब, धर्मलाभ

आपके गुणों की मैं अनुमोदना करता हूँ। अनेक महिनों तक आपने खुब मेहनत करके मेवाड़–गोड़वाड़, मारवाड़–सिरोही के भव्य मंदिरों को पुस्तकों द्वारा जग–जाहिर करके खुद महान कार्य किया है।

गोड़वाड़–मारवाड़ वालों को मालुम ही नहीं था कि मेवाड़ में इतने विशाल भव्य एवं दिव्य मंदिर है, आपने पुस्तक द्वारा लोगों को बताया। 'मेवाड़ दर्शन' की पुस्तकों द्वारा जहाँ मेवाड़ वालों को मालुम हुआ कि गोड़वाड़ में देव विमान समान बड़े–बड़े तीर्थ व सुंदर–सुंदर मंदिर है तो वहीं आपने गोड़वाड़, सिरोही व मारवाड़ तक के सैंकड़ों मंदिरों को भी 'सिरोही दर्शन' आदि पुस्तकों द्वारा आपने मेवाड़ वालों को बताया।

आपने प्रभु शासन के इन तीर्थों की खूब–खूब मेहनत करके सुंदर पुस्तकों को प्रभु शासन को समर्पित की है। आपके शुभ कार्य की खुब–खुब अनुमोदना करता हूँ। लाख–लाख धन्यवाद आपने अपने जीवन में खूब अच्छा व महान कार्य किया है। आपकी यह पुस्तकें पूरे जैन समाज की उपयोगी बनेगी। समस्त जैन संघ आपको याद करेगा

मंगलकामनाओं सहित

आचार्य पूण्यकीर्तिसूरी जी म.सा.

जेठ सुद 11 विक्रम संवत 2077 के दिन आचार्य पद पर आरूढ़ प्रन्यास प्रवर, अपराजित विजय जी गणिवर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय

सांसारिक नाम	:	श्री अशोक कुमार भीमराज जी
पिताश्री	:	श्री भीमराज जी भगवान जी, बाबा सोलंकी बेड़ा वाला (राजस्थान)
मातोश्री	:	श्रीमती
जन्म	:	विक्रम संवत 2015, शिवगंज, सिरोही (राजस्थान)
व्यावहारिक अभ्यास	:	बी.एस.सी.
दीक्षा	:	विक्रम संवत 2035, आषढ़ सुदी 10, अमलनेर (महाराष्ट्र)
बड़ी दीक्षा	:	विक्रम संवत 2036, आसोज वद 13, माधव बाग, मुंबई
दीक्षा गुरु	:	वैरागी देशनादक्ष परम पूज्य आचार्य श्रीमद विजय हेमचंद्र सुरिश्वर जी म. सा.
दीक्षित नाम	:	परम पूज्य मुनि श्री अपराजित विजय जी म. सा.
गणि पदवी	:	विक्रम संवत 2057, महावद 4, घाटकोपर
पन्यास पदवी	:	विक्रम संवत 2059, वैशाख सुद 7, न्यू समा, वड़ोदरा
आचार्य पद	:	ज्येष्ठ सुदि 15, 2078
शिष्य	:	पन्यास प्रवर श्री सत्वभूषण जी म.सा.
प्रशिष्यादि	:	मुनिश्री नंदीप्रेम विजयजी म.सा., मुनिश्री मौतार्य विजयजी म.सा., मुनिश्री मौर्यप्रेम विजय जी म.सा.
सांसारिक भाई	:	श्री नरेन्द्र कुमार, निर्मल कुमार
सांसारिक बहन	:	पुष्पा बेन, शकुंतला बेन (साध्वी सिद्धि कृपा श्रीजी म.सा.), मंजुलाबेन, ग्रीष्माबेन
दीक्षित परिवार	:	पन्यास सत्वभूषण विजय जी म.सा., साध्वी जिनकृपा श्रीजी म.सा., श्री वीरकृपा सिंह जी म.सा., साध्वी श्री भक्ति कृपा श्रीजी म.सा., श्री सिद्धि कृपा श्रीजी म.सा., श्री रिद्धि कृपा श्रीजी म.सा.
धार्मिक अभ्यास	:	संस्कृत, प्राकृत, न्याय, आगम ग्रंथों, छेद ग्रंथों तथा ज्योतिष संबंधी ग्रंथों के तात्विक प्रवचनकार

श्रीमान सोहनलाल एस. सुराणा जी

नि. सेवाणी हाल थाणा द्वारा भेंट अभिनन्दन-पत्र

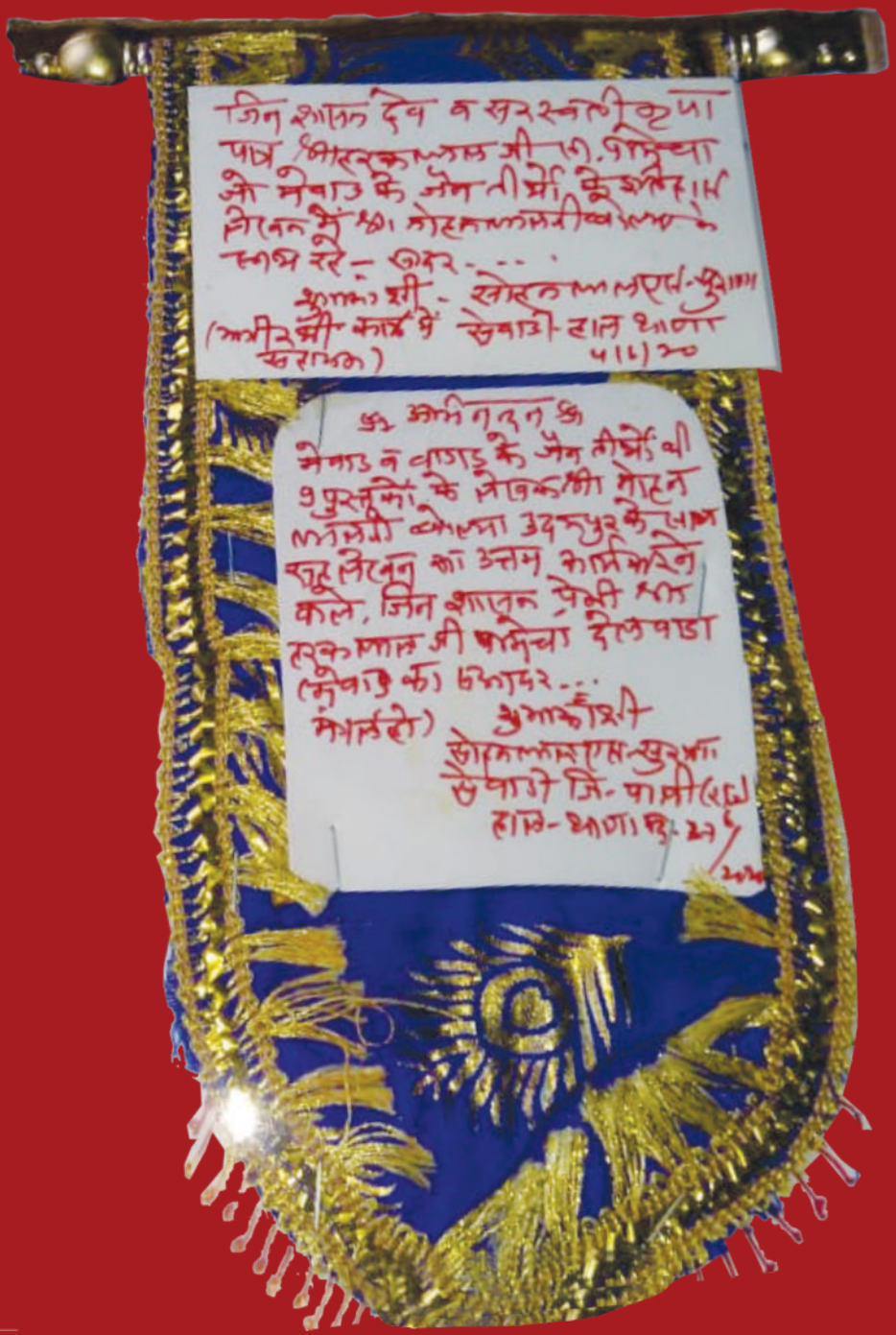

पटवा की हवेली
जैसलमेर

प्रस्तावना

धर्मावलम्बियों में अपनी–अपनी श्रद्धा एवं विश्वास होता है व विश्वास भी होना चाहिये लेकिन धर्मों का अनादर भी नही करना चाहिए। वैसे अनुभव यह है कि सभी धर्म में मनुष्य के मोक्ष व मुक्ति का ही मार्ग बताया गया है। यह भी सत्य है कि मार्ग भिन्न–भिन्न बतलाए हैं लेकिन मंजिल एक ही है। अपनी बात प्रारम्भ करने के पूर्व यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि किसी भी धर्म की कोई न कोई परम्परा प्रचलित है, आज से नहीं, हजारो वर्षों से चली आ रही है। आप क्यों अपना रहे हो, क्योंकि प्रारम्भ से चल रही हे। ये परम्परा ऐसे ही नहीं बनी। वह किसी न किसी अनुभव, घटना के कारण ही बनती है। पूर्व में ज्ञान का महत्व रहा है और साधु–सन्तों की स्मरण शक्ति भी अच्छी थी, उन्हें सभी ज्ञान कंठस्थ हो जाता था।

जैन साहित्य का अवलोकन करें तो आपको ज्ञात होगा कि वर्तमान चौबीसी के पूर्व भी कई चौबीसी हो गई। इसी बात को इतिहास के झरोखें में देखे तो यही सत्य है। वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान (ऋषभदेव) हुए है, जिनकी आयु 84 लाख वर्ष पूर्व रही और ऊँचाई 500 धनुष बताई गई है।

जैन दर्शन को समझाने के लिए जैन अनुयायियों व अन्य को यह स्वीकार करना होगा तथा पूर्व विश्वास व श्रद्धा से स्वीकार करना होगा। इस पर पूर्व रचित साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला, शिलालेख आदि प्रमाण प्राप्त होते हैं जिनको झुठलाया नहीं जा सकता। इसके लिए हमको प्राचीन ग्रन्थों को आत्मसात करना होगा। यदि हमारे पास उनके पठन–पाठन का समय न हो तो जिनवाणी को श्रवण कर उसे समझना व चिन्तन किया जाना चाहिये।

लेखक ने कई मन्दिरों, शिलालेखों व साहित्य का अध्ययन कर संक्षिप्त रूप से पाठकों के सम्मुख प्रदर्शित किया जिसमें स्वधर्म व विश्वव्यापी धर्म को जाना जा सके। धर्म तर्क का विषय नहीं बल्कि समझने, चिन्तन करने व आत्मसात करने का विषय है।

प्रस्तुत पुस्तक में जैसलमेर का इतिहास व मार्ग के अन्य तीर्थों की यात्रा करते हुए संपूर्ण इतिहास लिखने का प्रयास किया, यद्यपि नैत्र ज्योति अति क्षीण होने से यह संभव हो सकता है कि वर्णन करते हुए कमी रही हो। यह भी सत्य है कि राजस्थान के प्रमुख प्रसिद्ध कलात्मक तीर्थ की यात्रा का कई समय से विचार करता रहा। कई कठिनाईयों की वजह से यह यात्रा नहीं हो सकी। संयोगवश श्री हरकलाल जी पामेचा, देलवाड़ा व उनके परिवार ने सहमति जताई तो हमारे दोनो परिवारजन संयुक्त रूप से यात्रा के लिए निकल गए। मार्ग मे प्रमुख मन्दिरों में दर्शन करते हुए दर्शन, वन्दन, व पूजा की। इस संपूर्ण यात्रा में लेखक की पत्नी श्रीमती सुशीला बोल्या, श्री हरकलाल जी पामेचा व उनकी पत्नी श्रीमती प्रेमदेवी पामेचा, श्री गोपाल ड्राईवर इन सभी सदस्यों ने मेरी नैत्र ज्योति का अभाव होने से चलने, उतरने, चढ़ने, कलात्मक विवरण का वर्णन करने, क्या वस्तु कहां व कैसी है, से अवगत कराया। इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए आभार व्यक्त करता हूँ। ये नहीं होते तो, यह यात्रा संभव नहीं होती।

कोरोना वायरस की विश्वव्यापी महामारी चल रही है। इसमें भारत देश भी बाधित नहीं है। इस माहमारी में

लॉकडाउन का आदेश हुआ। इसी बीच जैन धर्म की नवपद ओली जो चैत्र माह में आयोजित होती है। इस सम्बन्ध में लेखक ने अपनी यात्रा का वर्णन, आराधना विधि, विश्व कल्याण का वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संक्षेप में वर्णन किया है जो इस प्रकार है :

1. किसी भी धर्म में तीन वस्तुए प्रमुख है : मंत्र, यंत्र एवं तंत्र। जैन धर्म में नवकार मंत्र एक प्रभावशाली मंत्र है, जिसे अमेरिका व अन्य देशों में भी स्वीकार किया गया है।
2. यंत्र : यंत्रों में सिद्धचक्र यंत्र, प्राचीनकाल से चल रहा है। इसकी आराधना प्रतिवर्ष अश्विन (आसोज) एवं चैत्र माह में आयोजित होती है।
3. तंत्र : क्रिया तंत्र में सामायिक तंत्र है जिसके माध्यम से संसार से मुक्ति मिलती है।

नवकार मंत्र के 9 पद होते है। इसे तीन भागों में बाँटा गया है :–

1.	पहले दो पद	:	देव के
2.	तीन–चार–पांच वे पद	:	श्री गुरू के
3.	अंतिम चार पद – धर्म के	:	

इसको समझने के लिए इसी मंत्र की आराधना से गुरू की आराधना के गुणों का वर्णन करते हुए सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक चरित्र एवं सम्यक तप इसके आधार पर विश्व–शांति प्राप्त हो। इसका इन सबका पृथक शीर्षक के साथ वर्णन किया ।

महामारीकाल में जो भी विद्वान अपना केवल वैदिक धर्म का उदाहरण देता है, वह यह भूल जाता है कि वैदिक धर्म के पहले जैन धर्म था जिसका विवरण पृथक शीर्षक में दिया है। श्री आदिनाथ ने अपनी पुत्रियों को गणित, कला की शिक्षा दी। समाज की असि, मसि, षि का ज्ञान दिया। यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आदिनाथ भगवान ने ही सामाजिक संरचना कर सामाजिक अवधारणा की। प्रश्न यह उठता है कि उत्तर में आता है कि वेद किसने लिखे, अज्ञात रहा। यह स्मरण करना चाहिए कि पूर्व में कोई लिपि लिखने कागज उपलब्ध नहीं थे इसलिए प्रयोग में नहीं लेते थे। भूतकाल जैन साहित्य में मिलता है। वे कंठस्थ हो जाते है। परिस्थिति प्राकृतिक घटनाओं के कारण लिपिबद्ध नहीं हुआ तब ताड़ पत्र पर लिपीबद्ध हुए। जैन आगमों का विश्लेषण व लिपिबद्ध ताड़पत्रों में विद्यमान है जिसके लिपिबद्ध भगवान महावीर के निर्वाण के 994 वर्षों बाद लिपिबद्ध हुए। कागज का अविष्कार 1400 वर्ष पूर्व हुआ है जो कि लिपि में ग्रन्थ है, 1400 वर्षों के लगभग है।

केवल एक धर्म को प्राचीन बताकर या बड़ा बताना उचित न होगा। अन्य धर्मों के साहित्य का अध्ययन भी करना चाहिए। भारत में कई धर्म प्राचीन है। जिसमें जैन, वैदिक, बौद्ध, ईसाई धर्म सभी को समान बताकर इति करना चाहिए। शासन के विरूद्ध कुछ लिखा हो, किसी को अच्छा न लगता हो तो हमारे धर्म के अनुसार मिच्छामि दुक्कड़म।

सद्भावी

(मोहनलाल बोल्या)

प्रकाशक–सम्पादक

लेखक का अभिमत

इस पुस्तकों की प्रस्तावना के प्रपत्र में पुस्तक का प्रकाशन का उद्देश्य व सहयोगियों का नाम–आभार आदि का वर्णन किया गया है लेकिन जैन धर्म का कुछ भाग का अध्ययन, पठन, चिन्तन, मनन व व्यवहार जगत का अनुभव के आधार पर मेरा अभिमत है कि जैन धर्म प्राचीन, वैज्ञानिक, सर्वभोम व सार्वभौम से उपर है, इसका वर्णन अन्य धर्म में कही नहीं है, लेकिन सिद्धान्तों, परम्पराओं में विभिन्नता है।

वर्तमान में मैं जैन धर्म के आचार्य भगवंतों, साधु भगवंत से क्षमा मांगते हुए अनुरोध करना चाहूँगा कि जैन धर्म की बारिकियों का विज्ञान से जोड़कर समझाने का उपदेश देना चाहिए। नई पीढ़ी के नवयुवक जैन धर्म के प्रति आकर्षित होंगे जो वर्तमान में बहुत ही आवश्यक है। मैंने आगम की गणित को समझने का प्रयास किया, विभिन्न समुदाय के आचार्यों से चर्चा की, उनसे भी संतुष्ट नहीं हुआ। सारांश में उनका एक ही उत्तर मिलता है। इसको मैं भी स्वीकार करता हूँ कि शास्त्रों में लिखा असत्य नहीं है तो यहां पर स्पष्ट निवेदन है कि इतिहास को बिना तोड़े धर्म को समझना चाहिए। जैन धर्म को समझने के लिए दो भागों में विभक्त किया जा सकता है जिसका जैन दिग्दर्शन की पुस्तक में वर्णन है लेकिन दुर्भाग्य यह कि साहित्य को पढ़ने की रुचि नहीं है और आचार्य/साधु संत तो इस प्रकार की शोध करने वालों को उत्साहित नहीं करते है। ज्ञान बढ़ाने के लिए ज्ञान भण्डार, पुस्तकालय भी स्थापित किए, उनकी दुर्दशा हो रही है वे सभी परिचित है और साधु भगवत–अपने नाम की लोलुपता के कारण इतनी अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कराते है जिसका उपयोग तो नहीं होता है व दीमक लगते देखी है, प्राचीन आचार्यों की हस्तलिखित ग्रन्थ एक कौने ढेर के रूप में देखी जा सकती है इसको दो भागों से देखा जा सकता है।

(1) धर्म का कठोर भाग (2) सरल भाग

आचार्य/साधु भगवंत धर्म के कठोर भाग को ही प्रवचन के माध्यम से समझाते है जो किसी के भी समझ में आना कठिन है अतः सरल भाग को ही समझाना चाहिए।

(1) आगम की गणित को नहीं समझा कर प्राचीनकाल में तीर्थंकर भगवान की ऊँचाई, उम्र को लेकर समझ जाने की उनकी लम्बाई व उम्र अधिक थी इसको वैज्ञानिक, धार्मिक, धर्मशास्त्र, समाजशास्त्र पुरातत्ववेताओं के मत के आधार पर समझाया जाय तो शास्त्रों पर विश्वास होगा और वे सत्यता को समझ सकेंगे। जिसके लिए मैंने कुछ प्रयास करते हुए सिरोही के पाली के जैन मंदिर व जिन दिग्दर्शन पुस्तक में किया है।

कुछ एकता के रूप में नूतन नए नियमों का प्रतिपालन करे तो संभव होगा। यदि हमें नई दिशा में जाना

है तो गच्छवाद से उपर उठकर सोचना पड़ेगा यदि हम गच्छवाद व छोटे–बड़े के भेद को रखेंगे तो वह समय दूर नहीं है कि जैन धर्म नाम मात्र के लिए जाना जाएगा क्योंकि इस मतभेद की नीति के कारण ही नूतन पीढ़ी अन्य धर्मों की ओर अग्रसर हो रही है और अर्न्तजातीय विवाह व अन्य सामाजिक कुरीतियों के कारण जैन धर्म छोड़ रहे हैं उदाहरण स्पष्ट है कि 2200 वर्ष पूर्व जैन धर्म के अनुयायियों की जनसंख्या 40 करोड़ थी। वर्तमान में विश्व में जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या 70 लाख है।

अपने ही परिवार के सदस्य के पुत्र–पुत्रियों को पढ़ाने में अक्षम है और इलाज भी कराने में असक्षम है उनको कोई सहयोग नहीं दिया जाता है। यह भी देखा गया कि अपने माता–पिता की भी कोई संभाल नहीं होती है। जबकि सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य ने लिखा है कि नाम लोलुपता के कारण प्राचीन मंदिरों के स्थान पर नूतन मंदिर बनाकर प्राचीनता नष्ट की जा रही है, इससे भगवान की प्रतिमा व कला नष्ट हो जाएगी। अतः प्राचीनता को संरक्षण किया जावे और आवश्यकता है तो नूतन मंदिर बनवाए जाए।

यह घटना दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ भगवान के समय चक्रवति राजा के समयकाल में अष्टापद तीर्थ की यात्रा कराने का समय है। जो (त्रिषष्ठी पुरूष शलाका चरित्रम् से उल्लेखित है) लेकिन वर्तमान में प्राचीन मंदिरों को तोड़कर जीर्णोद्धार के नाम पर नूतन मंदिर बनाए जा रहे हैं इसके साथ साथ नूतन विशाल मंदिर बनवाए जा रहे हैं जिनमें सैंकड़ो की संख्या में प्रतिमाएं स्थापित कराई जा रही है जिनको पूजने वाले उपलब्ध नहीं होते हैं। इस प्रकार अदूरदर्शिता व असातना हो रही है, इसका दोषी कौन ?

इसी प्रकार से मेवाड़ क्षेत्र का उल्लेख करना चाहूँगा कि वर्तमान में जो मंदिर है वहां पर कोई जैन परिवार नहीं रहता है न कोई पुजारी है, मंदिर खण्डहर हो रहे है उनको सम्भालने वाला नहीं है। इस क्षेत्र में कोई साधु–साध्वी विचरण नहीं करते इसलिए मूर्तिपूजक समुदाय के सदस्य थे। वे साधु–साध्वी के विचरण न होने के कारण स्थानकवासी समुदाय में सम्मिलित हो गए। इसका मूल कारण यह है कि साधु–साध्वी इस क्षेत्र में विचरण नहीं करना, मूर्तिपूजक समाज के साधु–साध्वी पालीताणा, सूरत, अहमदाबाद में समूह के रूप में विचरण करते हैं। इसका विशेष विवरण "मेरी मेवाड़ यात्रा" नामक पुस्तक जो विद्याविजय जी म.सा. की पुस्तक में उल्लेखित है।

मेवाड़ के सदस्य धर्मप्रेमी, त्यागमय है लेकिन अधिक नर सामान्य स्तर के है। मूर्तिपुजक समाज के आचार्य के साथ 25 से 60 का समूह होता है जो एक साथ विहार करते हैं और एक ही स्थान में ठहरते हैं।

यह संभव है कि इतनी बड़ी संख्या के लिए पर्याप्त स्थान, गोचरी व्यवस्था न हो। अतः दो–चार साधु –साध्वी को विभिन्न ग्रामों में चातुर्मास करने की अनुमति देकर जैन धर्म का प्रचार–प्रसार करने में सहयोग देना चाहिए। यह स्थानकवासी/तेरापंथ में जिससे वे सम्प्रदाय के नाम से बलशाली है और सम्प्रदाय को बड़ा मानते है, जैन धर्म के सिद्धान्तों को भूल जाते है।

एक समय था कि उदयपुर शहर में भी मूर्तिपूजक समाज भी नगण्य हो गया था उस समय श्री जवेर

सागर जी म.सा. ने लगातार 8 चातुर्मास करके मूर्तिपूजक समाज को पुनः जागृत किया क्योंकि यह वो सभी सम्प्रदाय/समुदाय वालों को स्वीकार्य होगा कि मूर्तिपूजक समाज के आचार्यों ने ही जैन साहित्य की रचना की जो वर्तमान में भी उपलब्ध है और बाद में सभी समाजों ने उसी आधार पर कम ज्यादा करके रचना कर प्रकाशित करवाए।

मूर्तिपूजक समाज के सदस्यों को शिक्षा लेनी चाहिए कि :

1) दर्शन–वंदन कर मंदिर से बाहर होकर जैन शास्त्र को प्रतिदिन यथासमय प्रतिदिन अध्ययन करना चाहिए जैसा कि दिगंबर समाज के श्रावक–श्राविकाएं करते हैं।

उक्त प्रकार से मूर्तिपूजक समुदाय के लिए वर्णन किया है लेकिन संक्षेप में जैन धर्म के सिद्धान्तों को लेकर सभी समाज (जैन धर्म के) को ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा कि :

1) जैन धर्म को विघटन से बचाया जाए।

2) जो विघटन हो गया है वे अपनी अपनी मान्यताओं के अनुसार पालन करते हुए जैन धर्म के मूल सिद्धान्त को मानते हुए एकता का परिचय देना चाहिए। केवल 4 महावीर जन्म कल्याणक आयोजन, जय–जय करने से एकता नहीं होती।

जैन धर्म को एकता के सूत्र में बांधने के लिए सर्वप्रथम सभी जैन के साधु–साध्वी, मूर्तिपूजक सम्प्रदाय, स्थानकवासी, तेरापंथी, दिगम्बर एक साथ मिलकर अपने अपने विचारों के अनुकूल बैठक करे, पुनः आग्रह है कि जैन शासन के सभी साधु भगवंतों को आपस में एक स्थान पर मिलकर निश्चय करना चाहिए, इससे यह भी आग्रह है कि किसी भी समुदाय बिना किसी भेद–भाव के अपनी अपनी मान्यताओं व परम्पराओं का पालन करना चाहिए। लेकिन एक दूसरे का आलोचना नहीं करना चाहिए। इन्हीं कारणों से जैन धर्म आगे बढ़ सकेगा। यदि एक दूसरे भी आलोचना करने से तीसरा व्यक्ति, समाज या सरकार लाभ उठाते है।। साहित्य की रक्षा के लिए कई रुप देखे जा सकते हैं क्योंकि साधु–संतों के उपदेश से कई राशि उपलब्ध हो जाती है लेकिन शोधार्थी को ज्ञान भण्डार व पुस्तकालय के लिए राशि नही दी मिलती है।

वे उपदेश देते हैं कि सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र, इसके साथ अब सम्यक तप और जुड़ गया है। तप करने से ही मोक्ष प्राप्त होता है। माना कि तप एक साधन है लेकिन किसी को सम्यक दर्शन ही नहीं है उसकी परिभाषा ही ज्ञात नहीं है वह कितनी है, तप कर ले मेरी मान्यता है कि मोक्ष नहीं मिल सकता। आज आवश्यकता यह है कि दृष्टि से ही सम्यक दर्शन को समझाया जाए।

वर्तमान में ज्ञान देने के लिए छोटे–छोटे नाटक, चित्र कथा का उपयोग करना उचित होगा। आज टी.वी. के माध्यम से तीर्थंकर के चरित्र को सरल भाषा, सरल भाव को समझाया जाना चाहिए जिससे उनको शीघ्र स्थायी रूप से याद हो जाए। चित्रकथा को छोटा बताना अपने मन को संतुष्ट संग्रह कर सकता है लेकिन यह भी ध्यान में रखना होगा कि इतिहास को सही रूप में प्रस्तुति होते समय प्रायः देखा गया है कि मंदिर की प्रतिष्ठा

कराते समय तीर्थंकर भगवान को पाठशाला गमन के दृश्य को दिखाया जाता है।

महावीर भगवान के अतिरिक्त कोई भी भगवान का पाठशाला गमन नहीं हुआ जबकि बताया जाता है।

वर्तमान में मूर्तिपूजक समाज में धर्म को पूजा–पाठ, स्वामी वात्सल्य के रूप में समझा जाने लगा है। इसी प्रकार स्थानकवासी, गौतम परसादी, दयापालों के नाम से जाना जाता है। इसमें व्यय होने वाली राशि शौधकार्य, चित्रकथा, आदि टी.वी. के माध्यम में कराया जाने का अनुरोध है।

मूर्तिपूजा, समाज के मंदिर निर्माण बढ़ रहे हैं जबकि प्राचीन मंदिरों में स्थापित कई प्रतिमाएं अपूजित रही है। नाम व धन की लोलुपता के कारण यह कार्य हो रहा है जबकि लाखों करोड़ों रुपये ऐसे कार्य में व्यय होता है।

मेरे शब्दों से लेखन से किसी भी सदस्य अथवा समाज को बुरा लगा हो तो मिच्छामी दुक्कड़म्।

सद्भावी

(मोहनलाल बोल्या)

प्रकाशक–सम्पादक

लेखक का परिचय

नाम	–	मोहनलाल बोल्या
माता	–	स्व. श्रीमती गुलाबकुंवर बोल्या
पिता	–	स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या
जन्म स्थल	–	उदयपुर
जन्म दिनांक	–	15 जून, 1936
शिक्षा	–	बी.कॉम, एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	–	स्व. श्रीमती बसंत बोल्या एवं श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म	–	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	–	सेवानिवृत जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

- उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
- मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ – देलवाड़ा के जैन मंदिर
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ – केशरिया जी
- नवकार मंत्र स्मारिका
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 1
- नमोकार मंत्र – महामंत्र (मौन साधना, मंत्र)
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 2
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 3
- वागड़ प्रदेश के जैन श्वेतामबर मंदिर
- सिरोही एवं पाली जिले के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- जैन धर्म का मूल आधार 'आगम'
- महासभा दर्शन (मासिक पत्रिका) (जनवरी, 2011 से जनवरी, 2016 तक)
- जिन दिग्दर्शन
- जैन धर्म के 24 तीर्थंकर
- मरुधर क्षेत्र के प्रमुख जैन श्वेताम्बर एवं अन्य मंदिर

संस्थागत कार्य :

- कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
- संयोजक – ज्ञान खाता
- श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

पुस्तक प्रकाशन में सहयोगी सदस्य

श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्मपत्नी
श्री मोहनलाल बोल्या

श्रीमती सायरबाई सुराणा
पत्नी सोहनलाल जी सुराणा
नि. सेवाणी हाल थाणा, मुम्बई

श्री नरेन्द्र सुराणा
पुत्र सोहनलाल जी सुराणा
नि. सेवाणी हाल थाणा, मुम्बई

श्री विमलचन्द जी सिंघवी
(मूथा), पूणे

श्री राजेन्द्र लोढ़ा
पुत्र शांतिलाल जी लोढ़ा,
उदयपुर

श्रीमती नीरू लोढ़ा
पत्नी राजेन्द्र जी लोढ़ा
उदयपुर

सुश्री हिनीका लोढ़ा
सुपुत्री राजेन्द्र जी लोढ़ा
उदयपुर

श्री लविश लोढ़ा
सुपुत्र राजेन्द्र जी लोढ़ा
उदयपुर

श्री येवन्ती कुमारजी बोलिया
सुपुत्र : श्री मनमोहनलाल जी
बोलिया, नि. उदयपुर

श्रीमती प्रेमदेवी पामेचा
धर्मपत्नी श्री हरकलालजी पामेचा
नि. देलवाड़ा हाल उदयपुर

श्री दिनेश पामेचा
पुत्र श्री हरकलाल जी पामेचा
नि. देलवाड़ा, हाल उदयपुर

श्री परमेश पामेचा
पुत्र श्री हरकलाल जी पामेचा
नि. देलवाड़ा, हाल उदयपुर

CA श्री महेन्द्र जी पोखरना
पुत्र स्व. श्री भेरुलाल जी पोखरना
नि. महाराज की खेड़ी, हाल उदयपुर

श्री ओंकारसिंह जी बाबेल
पुत्र रतनलाल जी बाबेल
नि. कानोड़
हाल चित्तौड़गढ़

स्व. श्री प्रेमराज जी मुथा
(शहर चौधरी मेड़ता) की स्मृति में
पुत्र : डॉ. जतनराज मेहता 'साहित्य रत्न',
कवि लेखक,
पौत्र : श्री नेमराज जी मेहता,
प्रपौत्र : श्री पवनराज जी,
श्री सिद्धराज जी,
श्री ऐवन्तराज जी मेहता

श्री अशोक कुमार जी खमेसरा
पुत्र शेरसिंह जी खमेसरा की स्मृति में
धर्मपत्नी : श्रीमती निशी
अशोक कुमार जी खमेसरा,
सुपुत्र : मोनिश खमेसरा,
सुपुत्री : श्रीमती मोनिका
एवं श्रीमती मेघा

प्रकाशन में सहयोगी संस्था

आचार्यदेव श्री विजय हेमचंद्र सुरीश्वर जी महाराज एवं
आचार्यश्री विजय कल्याणबोधी सूरीश्वर जी महाराज साहब की
प्रेरणा व सदुपदेश से जिनशासन आराधना ट्रस्ट द्वारा
पुस्तक प्रकाशन हेतु 25,000/- रुपये प्रदान किये।
एतदर्थ आपका बहुत-बहुत धन्यवाद एवं
श्रीचरणों में शत-शत वन्दना।

आचार्यश्री अपराजित सुरीश्वर जी महाराज की प्रेरणा से श्री शंखेश्वर जी तीर्थ में
मुनिश्री मैतार्य प्रेम विजय जी म.सा., मुनिश्री मौर्य विजय जी म.सा.,
साध्वीजी श्री मोक्षानन्दी श्रीजी तथा साध्वीजी श्री हेतधरा श्रीजी म.सा.
के निमित्त ज्ञान खाते की राशि प्राप्त हुई,
उसमें से 25,000/- रुपये की राशि
पुस्तक प्रकाशन के लिए प्राप्त प्रदान की,
एतदर्थ आपका बहुत-बहुत आभार एवं
श्रीचरणों में शत-शत वन्दना।

आचार्य देव सिद्धहस्त लेखक परम पूज्य श्री विजयपूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.
एवं आचार्यश्री युगचन्द सूरीश्वर जी म.सा. की प्रेरणा से
प्रवचन श्रुत तीर्थ, श्री शंखेश्वर जी तीर्थ द्वारा
11,000/- रुपये की राशि
पुस्तक प्रकाशन के लिए प्राप्त प्रदान की,
एतदर्थ आपका बहुत-बहुत आभार एवं
श्रीचरणों में शत-शत वन्दना।

पुस्तक के सहयोगी बंधुओं का अभिनन्दन एवं आभार

- श्री हरकलाल पामेचा एवं श्रीमती प्रेमदेवी पामेचा, देलवाड़ा
- श्री सोहनलाल सुराणा, निवासी सेवाडी, जिला पाली
- श्री विमलचंद मूंथा (सिंघवी), पूना (महाराष्ट्र)
- श्री सोहनलाल जी लोढ़ा, देलवाड़ा
- श्री ललित जी नाहटा, नई दिल्ली
- श्री दलपतसिंह दोशी पुत्र श्री नंदलाल जी दोशी, उदयपुर
- श्री राजेश जी भंसाली, उदयपुर
- श्रीमती नीना सिंघवी, उदयपुर
- कुमारी हिनिका लोढ़ा, उदयपुर
- श्री लविस लोढ़ा, उदयपुर
- श्री प्रवीण दक, बापू बाजार, उदयपुर
- श्री नरेन्द्र पुर्बिया, उदयपुर
- श्रीमती नीलम धर्मपत्नी श्री अशोक जी भादविया मय परिवार
- श्रीमती नीता धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र जी धुपिया मय परिवार
- श्रीमती निशी धर्मपत्नी स्व. श्री अशोक जी खमेसरा मय परिवार
- श्रीमती नीना धर्मपत्नी स्व. श्री किशोर जी पगारिया मय परिवार
- श्री तेजसिंह जी बोल्या (भाई) मय परिवार
- श्री विनोद जी बोल्या (भाई) मय परिवार
- श्री संतोष जी भंसाली (बहन) मय परिवार
- श्रीमती सरोज बोरदिया (बहन) मय परिवार
- श्री राकेश जी बोल्या (भतीजा) मय परिवार
- श्री ऋषभ भण्डारी
- श्री श्वेता धर्मपत्नी निशांत धुपिया (कर्नाटक)

संशोधक सम्पादक की अभिव्यक्ति

– हरकलाल पामेचा

जैसलमेर पंचतीर्थी यात्रा सानन्द सम्पन्न करने के बाद इस पर प्राचीन पुस्तक बाबत जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया, परन्तु यह पुस्तक उपलब्ध नहीं हो सकी तो श्रीमान् मोहनलाल जी साहब बोल्या के मन में यह विचार आया कि क्यों न इस प्राचीन ऐतिहासिक मरुभूमि के जैन मंदिरों पर पुस्तक लिखी जाए। कोरोना महामारी की वजह से वृद्ध व्यक्तियों के लिए घर पर समय गुजारने के लिए इससे बेहतर क्या कार्य हो सकता है।

पूर्व की तरह इस बार भी मेरे सम्मुख यह विचार रखा कि समय का सदुपयोग करने हेतु जैसलमेर व अन्य मंदिरों बाबत् कुछ लिखने का मानस बन रहा है। मेरी तो यह इच्छा थी कि अब आप विश्राम ही करे तो ही बेहतर होगा। लेकिन वृद्धावस्था में भी मन को विश्राम नहीं होता है। मन में विचारों का आना और उनको कलम बद्ध करना आपके स्वभाव में हो गया। जो भी विचार आते वे आप लिखते ही जाते थे।

आत्मविज्ञान, आत्म दृष्टि, कर्त्तव्य नवपद ओली की आराधना पर आप की लेखनी बराबर चलती रही। मरूभूमि की यात्रा में जो कुछ भी देखा उस बाबत भी लिखना शुरू कर दिया। हमने आठ जिलों का भ्रमण किया। उदयपुर, राजसमन्द, पाली, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, झालोर व सिरोही जिलो का भ्रमण व तीर्थ स्थलों के दर्शन का सौभाग्य मिला। मरुभूमि के जिन मंदिरों के दर्शन, अवलोकन करने का अवसर मिला उनमें प्रमुख थे, पाली, ओसियां, नवगृह मंदिर, फलौदी, पोकरण, रामदेवरा जैसलमेर, अगर सागर, ब्रह्मसागर लोद्रवा पाटन आदि।

बीकानेर के मंदिरों पर भी आपकी कलम चली। आपकी नैत्र ज्योति बिल्कुल नहीं रही, फिर भी हमारे सहयोग से आपने दर्शन किये, विवरण सुना, सुनकर व पूछकर जानकारी प्राप्त की। उसी का विस्तार से वर्णन इस पुस्तक में करने का प्रयास किया। आपका यह मानना था कि यह सामग्री आने वाली पीढ़ी के लिए उपयोगी होगी व शोधकार्य करने वाले बँधु इसका लाभ उठा सकेंगे। प्राचीन इतिहास में रूचि रखने वाले बँधुओं के लिए यह पुस्तक ज्ञान का भण्डार सिद्ध होगी।

जैसलमेर मरुभूमि का अंतिम जिला है जो पाकिस्तान की सीमा के पास स्थित है। एक समय था जब धर्मप्रेमी बंधुओं को यहां की यात्रा करने बाबत् कई बार सोचना पड़ता था पुराने समय में जब बैलगाड़ी या ऊँटों पर बैठकर यात्रा की जाती थी। गर्मी के मौसम के अलावा यहां पर आने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों का जमावड़ा रहता है। कई बड़े–बड़े होटल व गेस्ट हाउस बन चुके है। चारो तरफ सुन्दर कलात्मक हवेलियां बनी हुई है। स्वर्ण नगरी का किला जो घाघरानुमा कोट से बना हुआ है, अपने गौरवशाली एवं

वैभवशाली अतीत की याद दिलाता है। राजमहल व किले के जैन मंदिर तो पर्यटकों की पहली पसन्द है। किले के मंदिरों के ज्ञान भण्डार इसके गौरव को बढ़ाते है। किस प्रकार यहां के बापना, चोपड़ा, डागा, भणसाली आदि परिवारों ने अपनी धन–सम्पदा का उपयोग इन मंदिरों के निर्माण व जीर्णोद्धार में किया। आचार्यों, यतियों आदि ने यहां रहकर साहित्य की रचना की ताड़ पत्रों के लिखे गए ग्रंन्थों को एकत्रित कर यहाँ सुरक्षित रखा।

उस समय जब यातायात के साधन नहीं थे वे कितनी कठिन विषम परिस्थिति में यहां पर आकर रहे व सुन्दर कलात्मक मंदिरों, तोरणद्वारों, झरोखें का निर्माण कराया। यहां की हवेलियाँ तो विश्व प्रसिद्ध है। पांच पटवा भाईयों की विशाल पाँच मंजिली हवेलियों की कलाकृति, खुदाई के कार्य को देखकर हमें जैसलमेर के गौरवशाली वैभव की याद आती है। प्राचीनकाल में यह नगरी कितनी वैभवशाली रही होगी यह तो कल्पना ही कि जा सकती है। जबकि पहले पीने के पानी के भी लाले पडते थे। दूर–दूर से पानी लाया जाता था। लोद्रवा पाटन में तो आज जैन मंदिर के अलावा सब ओर खण्डहर ही दिखाई देते हैं। यही हाल अमर सागर व ब्रह्मसर व पोकरण का दिखाई देता है। जहाँ पर जैनियों की संख्या नगण्य है। कितनी कठिन यह पंचतीर्थी की यात्रा रही होगी यह तो भुगतभोगी ही जान सकता है। फलौदी, रामदेवरा, ओसिया, पाली व बीकानेर के जैन मंदिरों का विवरण भी श्री बोल्या जी को देने का प्रयास किया हे। आप किसी भी उस स्थल का विवरण नहीं लिखते है जिसका आपने अवलोकन न किया हो। देखकर सुनकर सही तथ्यों की जानकारी प्रदान करना ही आपका उद्देश्य है।

यह पुस्तक जिसमें मरूप्रदेश के विभिन्न धर्मस्थलों की विस्तृत जानकारी मय इतिहास के प्रदान करने का कार्य आपके सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है।

मुझे श्रीमान् बोल्या साहब ने इस पुस्तक हेतु प्रस्तुत सामग्री में संशोधन व सम्पादन करने का दायित्व प्रदान किया, इस हेतु आपका बहुत–बहुत आभार। आपके साथ कार्य करते हुए 16 वर्ष व्यतीत हो गये है। मेवाड़, वागड़ सिरोही, पाली जिलों के मंदिरों के साथ मरूभूमि के प्रसिद्ध मंदिरों के इतिहास बाबत् कार्य का एक और अवसर मिला है। इतिहास में रूचि होने की वजह से मैं इतिहास संकलन के कार्य से पिछले 16 वर्षों से जुड़ा हुआ हुँ व इस हेतु देश के विभिन्न प्रांतों की यात्रा भी सम्पन्न हो चुकी है।

मेरे इस कार्य में सहयोग देने हेतु मैं अपनी धर्म सहायिका श्रीमती प्रेम पामेचा का सकारात्मक सहयोग देने हेतु आभारी हूँ। आभार प्रदर्शित करता हूँ अपने पारिवारिक बंधुओं का जिनके सहयोग बिना कोई कार्य करना संभव नहीं। सुयोग्य सुपुत्र चार्टर्ड सेवाभावी श्री दिनेश, मार्बल व्यवसायी एवं सेवाभावी श्री परमेश, सुयोग्य गृहिणी श्रीमती अर्चना, सफल व्यवसायी श्रीमती सीमा, कुशल अभियंता सुपौत्र श्री शुभम्, दक्ष, टेकनी, शियभ, श्री मनन, सुपौत्री सेवाभावी सुश्री प्रियल, सुसंस्कारी सरस्वती तुल्य आर्ची, विनयवान, मधुरभाषी हनी पामेचा एवं दक्ष, अनुभवी चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट दामाद श्री महेन्द्र जी पोखरना, सुयोग्य गृहिणी श्रीमती पंकज पोखरना व प्रतिभावान दोहित्र श्री प्रांजल पोखरना का बहुत–बहुत आभार।

अपने कार्य को समर्पित करता हूँ स्वर्गीय सुपौत्र श्री रिषभ पामेचा, जिसकी मंद मुस्कान आज भी मेरी प्रेरणा की स्त्रोत है।

आभार प्रदर्शित करता हूँ श्रीमान् बोल्या साहब के पारिवारिक बँधुओं का, जिनके सकारात्मक सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था।

पाठक बंधुओं से निवेदन है कि आप एक बार मरुभूमि की पंचतीर्थी, फलौदी ओसिया, बीकानेर व पाली के जैन मंदिरों व अन्य धार्मिक स्थलों का अवश्य अवलोकन करे, ताकि आप भी जैन धर्म के गौरवशाली वैभव का दिग्दर्शन कर सके। पुस्तक कितनी उपयोगी बनी, इस हेतु आपके सुझाव अपेक्षित है। यह पुस्तक इस दृष्टि से लिखी गई है कि देशवासी इसका समुचित उपयोग करे एवं जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास को जो मंदिरों, ग्रन्थों, ताड पत्रों आदि के माध्यम से जो जैसलमेर के किले में सुरक्षित रखा गया है, आगे इसमें शोधकर्त्ताओं के लिए नये अनुसंधान की आवश्यकता है। इसमें यदि शोध कार्य को बढ़ावा मिला तो लेखक का प्रयास सफल होगा।

हरकलाल पामेचा

देलवाड़ा, जिला राजसमन्द

मोबाइल : 94685 79070

सह लेखक का परिचय

नाम : **हरकलाल पामेचा**
माता : स्व. श्रीमती भूरीबाई पामेचा
पिता : स्व. श्री कन्हैयालाल जी पामेचा
जन्म दिनांक : 27.08.1945
जन्म स्थल : देलवाड़ा (देवकुलपाटक), जिला राजसमन्द (राजस्थान)
शिक्षा : M.A. (Eng. Eco.), B.Sc., M.Ed.
व्यवसाय : राज्यसेवा से सेवानिवृत प्राध्यापक (अंग्रेजी) (RES)
धर्म सम्प्रदाय : जैन धर्म स्थानकवासी
धर्म सहायिका : श्रीमती प्रेमदेवी पामेचा (गृहिणी)
प्रकाशन कार्य : इतिहास के पत्र वाचन 6 प्रकाशित, अपनी पत्रिका में 5 आलेख प्रकाशित, जैन मंदिर देलवाड़ा पर आकाशवाणी वार्ता (1987)

संस्थागत कार्य :

पूर्व अध्यक्ष : शिक्षा समिति नागरिक विकास मंच, देलवाड़ा

सदस्य : संपादक मण्डल ''अपनी पत्रिका''

हेरिटेज पुस्तक का हिन्दी अनुवाद एवं संशोधन, हेरिटेज, कैलेण्डरों का प्रकाशन

सह सम्पादक :
– मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–3 – वागड़ प्रांत के जैन श्वेताम्बर मंदिर
– सिरोही व पाली जिले के जैन मंदिर

सह लेखक : 1) जैन धर्म का मूल आधार आगम 2) जिन दिग्दर्शन
सम्पादक : झाला वंश वारीधि
लेखक : देलवाड़ा के लाल श्री गुलाबचन्द कटारिया
लेखक व संशोधक : जैन धर्म के 24 तीर्थंकर
: सम्पादक : राजस्थान री गौरव गाथा
: इतिहास संकलन कार्य : चित्तौड़ प्रांत
: पत्रिकाओं में आलेख प्रकाशित : जैन मंदिर देलवाड़ा, नागदा संस्कृति (राजस्थान पत्रिका), हलकारा मुम्बई, खबर सम्राट– उदयपुर, जय राजस्थान, सिद्धार्थ फाउण्डेशन–सूरत, सम्यर्ग दर्शन
पत्रवाचन :
– राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय संगोष्टी–15
– महाविद्यालय व विद्यालयों में प्रवचन
– देवकुलपाटन–देलवाड़ा के देवालयों का इतिहास संकलन
केन्द्राधीक्षक :
– 18 वर्ष धार्मिक परीक्षा बोर्ड, जोधपुर
– जैलर परीक्षा – धार्मिक पाठशालाओं में मार्गदर्शन
सर्वेक्षण कार्य :
– मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–2
– मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ, देलवाड़ा के जैन मंदिर

मरूभूमि की मधुर यादें

– हरकलाल पामेचा

मानव के रूप में जन्म बहुत ही दुर्लभ है, उसमें भी जैन कुल में उत्पन्न होना। अनंत पुण्योदय से हमें मानव जन्म मिला है, इसका हम कैसे उपयोग करे, यह हमारे पर निर्भर करता है। प्रत्येक के जन्म की अहमियत एवं सार्थकता है। हमारा जीवन कीड़े–मकोड़े की तरह अर्थहीन नहीं है, जन्म और जीवन दोनों उद्देश्य युक्त है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि अपनाने पर व्यक्ति अपने प्रत्येक दिन को सार्थक और धन्य करने के लिए प्रयत्नशील हो जाता है।

व्यक्ति की मानसिकता के अनुसार ही जीवन और जीवन जीने का मार्ग निर्धारित होते है। मानसिकता विचारों को प्रभावित करती है और विचार ही व्यक्तित्व का निर्माण करते है, बेहतर विचारों से ही बेहतर मानसिकता और बेहतर व्यक्तित्व निर्मित होता है। मानसिक शक्ति और आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग कर असाधारण व्यक्ति बनता है। शारीरिक कमजोरी होने पर भी कामयाबी के पथ पर पहुँच सकते है, परन्तु मानसिक कमजोरी कामयाबी के पथ पर नहीं पहुँच सकती है।

इंसान के बुढ़ापे का सम्बन्ध उसके तन की अपेक्षा मन के साथ अधिक होता है। अगर मन में उत्साह आशा, ऊर्जा और उमंग हो तो 90 वर्ष की आयु में भी चालीस वर्षीय व्यक्ति की तरह क्रियाशील रह सकता है। निराशा से घिरा हुआ 30 वर्ष की उम्र का व्यक्ति 70 वर्ष की तुल्य हो जाता है। मजबूत मन का व्यक्ति उम्र को जीत लेता है। 90 वर्ष की उम्र में भी पिकासो चित्रकारी करते थे सुकरात 70 वर्ष की उम्र में भी मानव जाति के समक्ष अपने दर्शन का प्ररूपण करते थे। भगवान महावीर 72 वर्ष की आयु में चौबीस घण्टे तक उपदेश और धर्म मार्ग का प्ररूपण करने में समर्थ थे।

इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए श्रीमान् मोहनलाल जी साहब बोल्या, 85 वर्ष की उम्र में भी सकारात्मक सोच से कुछ ने कुछ करने का विचार रखते है। आँखों की रोशनी नहीं होने पर भी आपकी कलम को विश्राम नहीं है जो भी मन में विचार आते हैं। उन्हें महान कवि मिलटन की तरह कलमबद्ध करते रहते हैं। यद्यपि आप शरीर से कमजोर व विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त होने पर भी मन से युवाओं से भी अधिक सक्रिय है।

मेवाड़, वागड़, सिरोही के जैन मंदिरों के इतिहास के साथ ही आगम जिन दिग्दर्शन, चौबिस तीर्थंकरो के जीवन चरित्र व नवकार मंत्र पर भी आपकी कलम चल चुकी है, करीबन 15 पुस्तकें व 'महासभा दर्शन' पत्रिका को प्रकाशन का कार्य भी आप सम्पन्न कर चुके हैं। अपने आपको व्यस्त रखते हुए महामारी कोविड–19 के प्रकोप में भी आपने विश्राम लेना उचित नहीं समझा है।

यह आपकी सकारात्मक सोच व कार्य के प्रति निष्ठा व समर्पण का प्रतीक है। जबकि इस महामारी ने मेरी सोच को नकारात्मक बना दिया है।

माह फरवरी, 2020 में आपने जोधपुर ओसियां व जैसलमेर की यात्रा का प्रस्ताव मेरे पास भेजा साथ ही यह संदेश भी आया कि यदि आप चलने की स्वीकृति देते हैं तो सपरिवार चलेंगे। मैं तो वैसे ही भ्रमणशील व्यक्ति हूँ। श्रीमती के सम्मुख प्रस्ताव रखा कि जोधपुर में पु. गुरूदेव ज्ञान गच्छाधिपति श्री प्रकाश चन्द्र जी महाराज के दर्शन का लाभ भी मिलेगा।

इस प्रस्ताव को सुनकर तो ये भी साथ चलने हेतु तैयार हो गई। यद्यपि उस समय भी महामारी कोरोना की आहट शुरू हो चुकी थी। सर्वप्रथम हम उदयपुर से प्रस्थान कर देलवाड़ा होकर पाली पहुँचे। वहाँ के प्राचीन ऐतिहासिक श्री नवलखा पारसनाथ के मंदिर के दर्शन किये व भोजनशाला में भोजन का लाभ लिया। ऐतिहासिक जानकारी का संकलन किया। अन्य मंदिरों के बंद होने से उनके दर्शन नहीं हो सके। अगला पड़ाव जोधपुर शास्त्री नगर का था।

वहां पर ज्ञानगच्छाधिपति जी के व अन्य सन्त संतियों दर्शन किये, मांगलिक भोजन किया। उसके पश्चात् हम प्राचीन ओसवालों की उत्पत्ति स्थल ओसिया जी पहुँचे। यह स्थान जोधपुर से 70 कि.मी. दूर है, रात्रि विश्राम नव निर्मित जैन धर्मशाला में क्रिया व रात्रि में ही भगवान महावीर स्वामी के प्राचीन मंदिर में दर्शन किये। प्रातः उठकर पुरे मंदिर की परिक्रमा की तथा अन्य मंदिरों के दर्शन कर नाश्ता किया। उसके बाद ओसिया नगरी की सच्चियाँ माता जी (चामुण्डा माता) के दर्शन किये। उस दिन मंदिर स्थापना दिवस होने से भोजन व्यवस्था व नाश्ता ट्रस्ट द्वारा ही निःशुल्क कराया गया।

सच्चियाय माताजी का भव्य मंदिर है। कलात्मक 15 तोरण द्वार के साथ कई अन्य सनातन देव–देवियों के मंदिर भी है। 150 सीढ़ियों चढ़ने के पश्चातः ही माताजी के दर्शन होते है, यहाँ पर पूर्व में बलि होती थी परन्तु पार्श्वनाथ भगवान के छठे गणधर शिष्य आचार्य रत्नप्रभसुरी के प्रयास से बलि प्रथा समाप्त हो गई। ऐसा माना जाता है कि सच्चिया माताजी के श्राप से कोई भी ओसवाल यहां पर स्थायी निवास नहीं कर सकता है। व्यापारी वर्ग भी माहेश्वरी व अग्रवाल समाज का है।

पीपलाज माता का प्राचीन मंदिर व सनातन धर्म के 8वीं शताब्दी के मंदिरों के अवशेष मिलते है। नवलखा बावड़ी भी प्रसिद्ध है। यहां से हमारा अगला स्थल नवगृह मंदिर था जो कुबेर के नाम से भी प्रसिद्ध है। 25 कि.मी. राष्ट्रीय राजमार्ग से चलने के पश्चात् 4 कि.मी. अलग सड़क मार्ग से पहाड़ी पर यह सुन्दर, आकर्षक मंदिर बना हुआ है। नवगृहों की प्रतिमाओं के साथ सुन्दर कलात्मक, तोरण द्वार व आकर्षक प्रतिमाओं का भण्डार है। यह नव गृह मंदिर शयन भारत वर्ष में यह पहला नवगृह मंदिर है।

वह भी मरूभूमि में। यहां की मिट्टी भी बहुत पवित्र है, इसका उपयोग भी बीमारी में किया जाता है यह नवीन मंदिर बहुत ही आकर्षक है। यहां से प्रस्थान कर हम पहुंचे फलौदी शहर के प्रसिद्ध गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर की ओर शहर के बीचो बीच त्रिपोलिया दरवाजे के पास में यह कांच का मंदिर है। सड़क पर खड़े होकर भी मुख्य प्रतिमा जी के दर्शन हो जाते है। इस मंदिर में दर्शन विदेशी पर्यटकों के आने की वजह से हमें भी हो सके, अन्यथा शहर के सभी जैन मंदिरों के पट्ट बंद हो चुके थे। फलौदी शहर के मंदिरों का

इतिहास व प्राचीन नगर बाबत् जानकारी हमें श्रीमान सोहनलाल जी साहब सुराणा निवासी–सेवाड़ी (वाली) हाल मुकाम थाणा (मुम्बई) के माध्यम से मिली, इस हेतु सुराणा साहब का बहुत–बहुत आभार। अब हमारी कार ने रामदेवरा की ओर प्रस्थान किया। यह मंदिर भी बहुत प्राचीन है लोकजन बाबा रामदेव की स्मृति में बना हुआ है।

यहाँ पर पर्यटकों का तो मेला ही लगा रहता है। मंदिर परिसर में दर्शन की सुन्दर व्यवस्था है। हर वर्ष लाखों पर्यटक पैदल या अन्य वाहनों से भादवा मास में दर्शनार्थ आते है। मंदिर बहुत बड़े परिसर में बना हुआ है। यहां पर आवास व भोजन की बहुत ही सुन्दर व्यवस्था है। आज से 30 वर्ष पूर्व के रामदेवरा व वर्तमान समय में बहुत ही आमूल चुल परिवर्तन हो चुका है।

आज तो वाहनों की लम्बी–लम्बी कतारें लगी हुई है सभी सम्प्रदाय के बंधुओं के लिए यह धार्मिक आस्था का बहुत बड़ा केन्द्र है। ड्राईवर गोपालजी की वजह से हमें पाली, जोधपुर, ओसिया, फलौदी, रामदेवरा बाबत कई नई जानकारियाँ मिल सकी। यह व्यक्ति हर कार्य करने में प्रवीण है व हर कार्य पूर्ण निष्ठा व इमानदारी से करता है। फोटोग्राफी भी बहुत अच्छी कर लेता है इसकी वजह से हम नवगृह मंदिर के दर्शन कर सके।

अगली यात्रा पोकरण होकर जैसलमेर की तरफ थी। पोकरण के मंदिरों का अवलोकन कर हम जैसलमेर पहुँचे। विश्राम महावीर जैन धर्मशाला में ही करना था। मुश्किल से एक कमरा ही मिला। भोजन करने के पश्चात् समय का सदुपयोग करने हेतु हमने 5 कि.मी. दूर अमर सागर के मंदिरों को देखने का निश्चय किया। अमर सरोवर केपास ही प्राचीन मंदिरों की छठा अद्‌भूत है। सुन्दर बगीचे, रेगिस्तान क्षेत्र मे देखने का सुन्दर अवसर मिलना भी अपने आप में अलौकिक है।

महावीर भवन में रात्रि विश्राम किया। एक कमरे की और व्यवस्था मुनिम जी ने कर दी। सवेरे उठकर सर्वप्रथम इसी कैम्पस में धर्मनाथ उर्फ नेमिनाथ मंदिर में दर्शन किये। नाश्ता करने के पश्चात् जैसलमेर के किले के मंदिरों के दर्शन करने हेतु प्रस्थान किया। किले के मंदिरों में बोल्या साहब ने पूजा करने का लाभ लिया व हमने मंदिरों की कलाकृतियों को देखने, फोटोग्राफी का आनन्द उठाया।

मंदिरों में पाषाण व धातु की प्रतिमाओं की संख्या आश्चर्यचकित करने वाली थी। घाघरानुमा परकोटा, कलाकृति का अद्‌भूत नजारा, बारिक खुदाई, स्थापत्य कला, मूर्तिकला को देखकर रेगिस्थानी भाटो के नगर में हर पर्यटक व धर्मप्रेमी बंधु रोमांचित हो जाता है। उसका माथा इसके निर्माताओं के सम्मान में अनायास ही झुक जाता है।

जयपुर, उदयपुर व जैसलमेर में विदेशी पर्यटकों का मेला ही लगता है। यहाँ की कलात्मक हवेलियां, गोखड़े, झालियो की बारीक खुदाई व कला को देखकर दर्शक मंत्र मुग्ध हो जाता है। हम भी रोमांचित हो गये। किले के महल को देखा परन्तु ऐसा लगा कि पटवों की हवेलियां इनसे ज्यादा कलाकारी का खुबसुरत नजारा है। शहर के कोठारी पाड़े में पारसनाथ का मंदिर (108) सम्मिलित है। किले में ज्ञान भण्डार भी आलौकिक है।

चित्तौड़गढ़ के किले की तरह मरूभूमि में जैसल द्वारा 870 वर्ष पूर्व निर्मित किला स्वर्ण नगरी में आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, याद दिलाता है उनकी वीरता, त्याग व निर्माण का, जैसलमेर का किला भाटियों की आन, बान व शान का प्रतीक है तो किले के जैन मंदिर वहाँ के जैन परिवार के सेठ–साहुकारों के धर्म प्रेम, समर्पण व दान वीरता का आदर्श उदाहरण है।

मरूभूमि में इतने कलात्मक, भव्य मंदिरों व हवेलियों का निर्माण कर वहां के भंसाली, बापना, डागा, चौपड़ा आदि परिवारों ने जैन धर्म की गौरवशाली परम्परा को ही आगे बढ़ाया है। जहां पर भी धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा होती है। धन शुभ कार्यों में खर्च करने से बढ़ना ही है। जैसलमेर के ज्ञान भण्डार हमारी गौरवशाली जैन संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। पंच तीर्थी की यात्रा में केवल दो स्थल ही रह गये थे ब्रह्मसर व लोद्रवा पाटन। लोद्रवा का कल्पवृक्ष व सहस्त्रकला पारसनाथ का मंदिर, ठहरने हेतु सुन्दर धर्मशाला, काक नदी, भूमल की मेडी, प्राचीन महानगरी के भग्नावेश, नाग देवता का स्थल आदि दर्शनीय है।

ब्रह्मसर, जैसलमेर पंचतीर्थी का अंतिम स्थल है। यहां पर भी जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है। लाद्रेवा व ब्रह्मसर बाबत इस पुस्तक में विस्तार से वर्णन किया गया है। जैसलमेर पंचतीर्थी की यात्रा का समापन कर पुनः जैसलमेर की सुन्दर कलात्मक हवेलियों भवनों, बाग–बगीचो, तालाब आदि को कार से देखते हुए हमने स्वर्ण नगरी से विदा ली। यहां की यादों को मन में व मोबाईल में संजोकर हमने नाकोड़ा जी वाया बाड़मेर की ओर प्रस्थान किया। बाड़मेर में नहीं रूकने का अफसोस रहा।

मारवाड़ यानि मरूभूमि के प्रसिद्ध नगर व यहां के मंदिरों का अवलोकन नहीं करने का दुःख रहेगा। क्योंकि उम्र के इस पड़ाव में बार बार आना संभव नहीं है। नाकोड़ा जी की यात्रा तो बार बार होती रहती है। जैसलमेर पंचतीर्थी के मंदिरों की व्यवस्था जैसलमेर लौद्रवा ट्रस्ट महावीर भवन जैसलमेर द्वारा की जाती है। बहुत ही सुन्दर व्यवस्था है।

श्री नाकोड़ा जी में विश्राम करने के पश्चात् नाकोड़ा पारसनाथ जी, श्री नाकोड़ा भैरव जी व अन्य मंदिरों के दर्शन किये। उसके पश्चात् काल भैरव के मंदिर में दर्शन हेतु प्रस्थान करने के पूर्व भोजनशाला में सवेरे का नाश्ता किया। काल भैरव के दर्शन कर हमने अपने गंतव्य स्थल की और प्रस्थान किया। रास्ते में ब्रह्मा जी के मंदिर में दर्शन किये। जालोर में कुछ समय रूककर नन्दिश्वर द्वीप व अन्य दर्शनीय मंदिरों में दर्शन कर हम प्रस्थान कर गए माण्डोली की ओर।

यहां पर रेबारी समाज के गौरव आचार्य श्री शांतिसागर जी म.सा. की समाधि मंदिर में दर्शन किये। नीम के पेड़ की परिक्रमा की व फोटोग्राफी की। ऐसे चमत्कारी संत का जीवन चरित्र पढ़कर व सुनकर विसम्य हुआं मंदिर में निर्माण कार्य चल रहा था। सड़क के दुसरी ओर संग्रहालय व गार्डन व विश्राम स्थल बने हुए है। हम तो संग्रहालय को देखने गये। वहां से आचार्य श्री के जीवन चरित्र सम्बन्धित साहित्य चित्र व प्रदर्शनी का अवलोकन किया। कुछ पुस्तके व फोटो भी लिये।

कुछ समय और रूकने की इच्छा होने के बावजुद भी समय की सीमा को मद्देनजर रखते हुए प्रस्थान

किया। यहां पर ठहरने में असीम शांति का अनुभव हुआ। सभी और निर्माण कार्य चल रहा था। रास्ते में सिरोही की रामदेव होटल में चाय नाश्ता किया। बामनवाड़ की और प्रस्थान किया। मंदिरों के दर्शन कर वहां की भोजनशाला में भोजन किया। इतना प्राचीन एवं प्रसिद्ध मंदिर होने के बावजुद भोजनशाला की अव्यवस्था को देखकर आश्चर्य हुआ।

पहली बार हमें इस बाबत् शिकायत करने की आवश्यकता महसुस हुई। इसमें सुधार की आवश्यकता है। मैनेजमेंट को इस और ध्यान देना चाहिये। बामनवाड़ जी से सीधे अम्बेरी होकर देलवाड़ा आये। हमें वहीं उतार कर कार उदयपुर के लिए प्रस्थान कर गई। चार दिन की यात्रा (दिनांक 25.02.2020 से 28.02.2020) सुखद सम्पन्न हुई।

ड्राईवर श्री गोपाल जी के सेवा हर दृष्टि से बहुत ही उत्तम रही। एक व्यक्ति हर प्रकार का कार्य कितनी निष्ठा से कर सकता है, यह पहली बार अनुभव हुआ। मोबाईल से इसके द्वारा करीबन 100 फोटोग्राफ लिये गये जो यात्रा को यादगार बनाती है। श्रीमान् बोल्या साहब की वजह से हमारी भी सपत्नी सहित यह सुखद यात्रा दुसरी बार सम्पन्न हो सकी। श्री बोल्या साहब की जैसलमेर क्षेत्र की यह पहली यात्रा थी। जबकि हम तो 1989 में एम.पी. क्लब से वहां जा चुके थे। तीर्थ यात्रा भी नसीब से होती है।

हरकलाल पामेचा

देलवाड़ा, जिला राजसमन्द

मोबाइल : 94685 79070

मरुभूमि के जैन मंदिर व अन्य देवालय

उदयपुर शहर, देलवाड़ा, वागड़, सिरोही व पाली (गोडवाड) जिले के मंदिरों पर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है, नवकार महामंत्र, आगम, केशरियाजी तीर्थ, जिन दिग्दर्शन व जैन धर्म के 24 तीर्थंकर व आदि पुस्तकों का कार्य भी अब सम्पन्न हो चुका है। जहाँ तक मुझे स्मरण है चित्तौड़–प्रतापगढ़ जिले के मंदिरों पर जब हमारा सर्वेक्षण कार्य सम्पन्न हुआ। इस पर पुस्तक प्रकाशित हुई व इसकी एक प्रति आपने मुझे कोर्ट चौराहा, उदयपुर पर देकर कहा कि अब अपना कार्य पुरा हो चुका है। आपको बहुत–बहुत धन्यवाद है कि आपने इन जिलों के सर्वेक्षण कार्य में मेरा सहयोग लिया। मेरे परिवार के बँधुओं का भी यही कहना था कि आप दोनो हार्ट पैशेन्ट है। दोनों की बाईपास सर्जरी हो चुकी है। आप इस उम्र मे भी क्यों यह खतरा उठा रहे है। पता नहीं अचानक कौन कहाँ अस्वस्थ हो जाए। मेरा भी मानस अब आगे काम नहीं करने का बना। हमारे सोचने से भला क्या होने वाला है। सन् 2011 के बाद भी आगे का कार्य हमारा इंतजार कर रहा था।

बड़ी कठिनाई से घर वालों ने भीलवाड़ा जिले के कार्य की स्वीकृति प्रदान की। आगे की अनवरत यात्रा चलती रही। वागड़ प्रांत का काम करने के बाद सिरोही व पाली जिले की ओर जाने का कार्यक्रम बना। इस प्रकार श्रीमान् बोल्या साहब के साथ स्वास्थ्य की अनुकुलता न होते हुए भी अनवरत यात्रा का कार्क्रम चलता रहा। सिरोही–पाली के बाद हमारा कार्य उदयपुर मे रहकर ही करना था। आगम, जिनदिग्दर्शन व 24 तीर्थंकर पर पुस्तक तैयार करने में कही भी बाहर नहीं जाना पड़ा। सारा कार्य यही रहकर सम्पन्न हुआ। सभी पुस्तकों का समाज के प्रबुद्ध धर्म प्रेमी बंधुओं व इतिहासकारों ने स्वागत व सराहना की।

पुस्तक की माँग होने पर भी उपलब्ध नहीं है। शोध छात्रों व इतिहासकारों को इनकी फोटोकॉपी करवाकर उपयोग करने की सलाह देनी पड़ रहीं है। कुछ समय पूर्व बनारस से उदयपुर प्रताप शोध संस्थान, बी.एन. युनिवर्सिटी से एक शोध छात्र सिरोही व पाली की पुस्तक वहाँ से लेकर गया। मेवाड़ तीर्थ भाग–I, भाग–II एवं भाग–III की मांग अनवरत जारी है। शोध कार्य में इन पुस्तकों का उपयोग हो रहा है, यहीं परोपकारी श्री बोल्या साहब के लिए प्रसन्नता की बात है।

पूर्व गृहमंत्री व वर्तमान में राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाबचन्द कटारिया को जब मैंने ये पुस्तकें भेंट की तो आपका कहना था कि कितना परिश्रम करना पड़ता है। बुढ़ापे में इस कार्य को जारी रखो, ताकि धर्म व समाज सेवा का कार्य भी हो सके। पुस्तकें बहुत ही उपयोगी है। बहुमुखी प्रतिभा के धन, सुश्रावक, धर्मप्रेमी श्री मोहनलाल जी बोल्या ने सेवानिवृति के पश्चात् अपना सारा जीवन जैन धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों के निर्माण में लगा दिया है, भारतीय इतिहास, संस्कृति आदि के पहलुओं को अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर देश के जैन केन्द्रों की यात्रा कर अपने मौलिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया है।

राजस्थान व देश के अन्य प्रांतों के मंदिरों मुर्तियों पर व्यापक सामग्री उपलब्ध कराई उसका अनुमान

तो इससे ही लगाया जा सकता है कि आपने राज्य के छोटे–बड़े शहरों व कस्बों में स्थित हो, गाँवों, निरंजन स्थानों आदि में निर्मित धार्मिक स्थलों पर पहुँचकर व्यापक सर्वेक्षण किया व उन्हें पुस्तकाकार रूप में उपलब्ध कराने का सराहनीय कार्य सम्पन्न किया।

इस उम्र में एक व्यक्ति इससे बड़ा क्या कार्य कर सकता है ? मरुभूमि के मंदिरों बाबत् पुस्तक लिखने का विचार तो स्वप्न में भी नहीं था आपका इरादा तो जैसलमेर देखने का ही था क्योंकि यह आपकी पहली यात्रा थी। आदमी क्या सोचता है और भगवान की क्या मंशा होती है। अब आपके सम्मुख मरुप्रदेश के मंदिरों, किलो, आदि से सम्बन्धित एक नई पुस्तक प्रस्तुत की जा रही है।

इस हेतु इस महामारी कोरोनाकाल में आपने कितनी मेहनत की है, यह कल्पना से बाहर है। इसमें आपके दृष्टि विज्ञान, आत्म–दर्शन मानव के कर्त्तव्य, नवपद ओली, जैन समाज के लिए प्रेरणादायी कार्य आदि पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है। जीवन के 85 वर्ष पार करके भी युवकों से अधिक क्रियाशील श्रीमान् बोल्या साहब के बारे में प्रभु महावीर से यही प्रार्थना करता हूँ कि आप स्वस्थ रहे, मस्त रहे, प्रसन्नचित रहे, एवं धर्म संस्कृति की सेवा अनवरत करते रहे। आपका यह जीवन, मंगलमय हो, यही कामना है, पारिवारिक बंधुओं का सकारात्मक सहयोग भी आपको अनवरत मिलता रहे।

हरकलाल पामेचा

देलवाड़ा, जिला राजसमन्द

मोबाइल : 94685 79070

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	समर्पण, आशीर्वाद एवं आशीर्वचन	6–10
2	प्रन्यास प्रवर, अपराजित विजय जी गणिवर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय	11
3	श्रीमान सोहनलाल एस. सुराणा जी द्वारा भेंट अभिनन्दन–पत्र	12–13
4	प्रस्तावना	14–15
5	लेखक का अभिमत	16–19
6	लेखक का परिचय	20
7	पुस्तक प्रकाशन में सहयोगी सदस्य	21
8	प्रकाशन में सहयोगी संस्था	22
9	पुस्तक के सहयोगी बंधुओं का अभिनन्दन एवं आभार	23
10	संशोधक सम्पादक की अभिव्यक्ति	24–26
11	सह लेखक का परिचय	27
12	मरूभूमि की मधुर यादें	28–32
13	मरुभूमि के जैन मंदिर व अन्य देवालय	33–34
14	मंदिर क्यों बनाए जाते हैं ?	37–39
15	वैज्ञानिक दृष्टिकोण	40–41
16	जैन धर्म की वास्तुकला व चित्रकला	42–43
17	कलात्मक जैन मंदिर	44
18	जैन धर्म पर अन्य विद्वानों के मत	45–50
19	श्री पार्श्वनाथ भगवान (दादा पार्श्वनाथ) मंदिर, जूना बेड़ा	51–52
20	श्री सम्भवनाथ भगवान मंदिर, नया बेड़ा	53
21	श्री महावीर भगवान का मंदिर, नाणा	54–55
22	श्री नवलखा पार्श्वनाथ भगवान मंदिर, पाली	56–57
23	श्री सुमतिनाथ भगवान मंदिर, बीकानेर	58–59
24	श्री नेमिनाथ भगवान का मंदिर	59
25	श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, बीकानेर	60
26	ओसवाल जाति की उत्पति स्थल : ओसियां नगरी	61
27	श्री पीपलाज माता जी मन्दिर	62
28	श्री सच्चियाय माता जी (ओसियां माता जी) मंदिर	63
29	श्री महावीर भगवान का मन्दिर	64
30	नवलखा बावड़ी	66
31	फलौदी का इतिहास व जैन मंदिर फलौदी जैन तीर्थ	67–71
32	फलौदी नगर की ऐतिहासिक मन्दिरों की पृष्ठभूमि	72
33	श्री रामदेव जी का मंदिर, रामदेवरा	74
	जैसलमेर के पंचतीर्थी	75
34	श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर, पोकरण	76
35	जैसलमेर का इतिहास	77–79

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
36	**जैसलमेर किले के मंदिर**	80–91
37	श्री संभवनाथ भगवान का मंदिर, जैसलमेर	92–105
38	श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर, जैसलमेर	106–109
39	श्री शांतिनाथ भगवान एवं श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, जैसलमेर	110–117
40	श्री चंद्रप्रभ भगवान का मंदिर, जैसलमेर	118–133
41	श्री महावीर स्वामी का मंदिर, जैसलमेर	134–138
42	श्री ऋषभदेव भगवान का मंदिर, जैसलमेर	139–142
43	श्री कुंथुनाथ भगवान का मंदिर, जैसलमेर	143–147
	जैसलमेर शहर में स्थित मंदिर	
44	श्री सुपार्श्वनाथ भगवान, श्री सीमंधर स्वामी एवं गौड़ी पार्श्वनाथ मंदिर	148–154
45	श्री महावीर भवन में धर्मनाथ मंदिर	155
46	पटवा सोनी की हवेली	156
47	श्री आदिनाथ भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, अमर सागर	157–160
48	ब्रह्मसर तीर्थ	161–163
49	लोद्रवा तीर्थ	164–178
50	जैसलमेर तीर्थ संबधित प्रकाशित साहित्य सूचि	179
51	श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मेवा नगर	180–182
52	जालोर की स्थापना व प्रारम्भिक इतिहास	183–185
53	जालोर : स्वर्णगिरि के मंदिरों का इतिहास	186–189
54	श्री गिरिराज (विमल गिरी) शत्रुंजय तीर्थ महिमा	190–192
55	शंत्रुजय पहाड़ी पर देव लोक जैसा आभास : श्री पालीताणा तीर्थ	193–194
56	नव पद ओली आराधना	195–226
57	विदेशों में जैन धर्म	227–228
58	धर्म ईश्वर / कर्तव्य की महिमा	229
59	कर्तव्य क्या है ?	230
60	आत्म विज्ञान	231–242
61	हृदय परिवर्तन	243–244
62	विनय – विवेक	245
63	जैन धर्म की प्राचीनता का पुनः अवलोकन	246–248
64	पृथ्वी से छः गुणा ग्रह खोजा	248
	अभ्यास से तो मनुष्य प्रभावशाली बनता है	249
65	ज्ञान की पूजा (महत्ता)	250–251
66	श्री त्रिनेत्र गणेश जी, रणथम्भोर	252–253
67	विज्ञान और जैन दर्शन पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन	254–259
68	जैन धर्म का इतिहास व पुरातत्व	260
69	भूले बिसरे जैन श्वेताम्बर मन्दिर	261–262
70	संदर्भित पुस्तकों की सूची	262

मंदिर क्यों बनाए जाते हैं

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

क्यों आवश्यक हुई? Divine Power को के लिए बनाए गए है। जिस प्रकार वर्तमान में Waves को पकड़ने के लिए Software बनाए जाते हैं और उसी प्रकार Power-2 को पकड़ने के लिए मंदिर बनाए गए जिससे संसार का निर्माण हुआ, ब्रह्माण्ड का निर्माण हुआ। इस प्रकार मंदिर को निर्माण कर उसमें Power-2 को पकड़ने के लिए निर्माण कर उसमें Power-2 को पकड़ने के लिए Device का ढांचा बनाकर मूर्तियां स्थापित की। प्राण प्रतिष्ठा का अर्थ सजीव से नहीं है लेकिन उसमें Energy आ जाती है। इस शक्ति के कारण हमको Energy प्राप्त होती है। जब हम भगवान की मूर्ति के सामने बैठकर आंख बंद कर बैठते हैं तो हमें भगवान के द्वारा Energy प्राप्त होती है, शांति का अनुभव होता है, सकारात्मक शक्ति का संचार होता है।

जैसे सकारात्मक–नकारात्मक शक्ति मिलती है और हमारा दिलो–दिमाग सकारात्मक शक्ति की ओर होता है और सभी कार्य सफल होते हैं। जब हम मंदिर जाते हैं वहां भगवान की मूर्ति के सामने बैठते है तो वहां की सकारात्मक शक्ति की किरणें हमारे शरीर में प्रवेश होती है और कई बार हमें यह दर्शन मात्र से प्रसन्नता का अनुभव होता हैं और प्रसन्नता के आंसू छलक जाते हैं और कई बार हमें अपने गलत कार्य करने का अनुभव होने लगता है और उन भूलों की क्षमा भी मांगते हैं। क्षमा मांगकर अपने को हल्कापन का अनुभव भी करते है। इसी कारण प्राचीन मंदिर बनाए जाते थे जिससे हमारे शक्ति (Cause Mass) मिल सके।

इसी कारण के लिए हमको मंदिर जाने के पूर्व स्नान करने जाने को कहा जाता रहा है। शुद्ध वस्त्र पहनने के लिए जाना चाहिए, जिससे वहां के Divine सकारात्मक शक्ति ज्यादा, शीघ्र स्वीकार सके, ईश्वर के नजदीक पहुंचना, इसलिए हजारो वर्ष पहले मंदिरों का निर्माण हुआ।

संसार में हम क्या खाते–पीते हैं, कहां जाते हैं, कहां से आते हैं, इसका कोई प्रभाव भी होता है लेकिन, हम कहां से आए हैं, यह भ्रम लेकर आए हैं। हम क्या कार्य करके आए आए हैं और क्या बनना है ? इसी प्रकार की सेवा आत्मज्ञान की ओर बढ़ने से भी सोच आएगी और आप सकृत कर भगवान जैसे बन सकेगा।

सभी धर्म में ईश्वर भक्ति की जाती है। ईश्वर भक्ति के लिए मंदिर निर्माण किये जाते है और किए जा रहे है। कुछ व्यक्ति यह भी मानते हैं कि क्यों बनाते है और मंदिर में पाषाण, धातु के निर्मित मूर्ति में (निरासित) कही जाती है, ऐसा क्यों ? यहाँ स्पष्ट होना चाहिए कि जिस भी धर्म को हम मानते है उसके प्रति श्रद्धा, विश्वास, आस्था है या नही यदि है तो आपको उनके स्वरूप को मानना होगा। जैन धर्म में ऐसी

मान्यता है कि कोई भी तीर्थंकर बने है वे मनुष्य से ही बने है और उनका आकार मनुष्य का ही है या है उनके आकार को मंदिर में विराजित करते हैं। यह सही है कि मूर्ति पत्थर, धातु की होती है लेकिन विधि–विधान द्वारा (धार्मिक क्रिया) द्वारा उसमें प्राण प्रवेश कराया जाता है। प्राण–प्रतिष्ठा में करते समय पत्थर की मूर्ति की आँखों में से एक विकिर्ण निकलती है, यदि उस कमरे में कांच हो तो वे विर्किण से कांच के टुकड़े टुकड़े हो जाऐंगे। विधि–विधान कराते समय आचार्य साधु के चेहरे को उस समय शासक कोई देखना चाहेंगे और देखेंगे तो यह भी है वह डर जायेगा। इसलिए कोई आचार्य किसी भी श्रावक को अन्दर (मन्दिर में) नहीं रखते और यह क्रिया रात्रि में ही सम्पन्न करते है।

(निजी अनुभव) मनुष्य पूजा इसलिए करता है कि भगवान के गुण जो उनके मनुष्य के रूप में उनको प्राप्त हुए थे मनुष्य को भी प्राप्त हो जाए। दूसरा प्रश्न यह भी आता है कि पुष्प, चावल आदि क्यों चढ़ाते हैं। इसका मूल भाव यह होता है कि कुछ प्राप्त करने के लिए समर्पण का भाव भी रखना चाहिए। चढ़ाना या लौट करना यह व्यक्तिगत भावना है।

मेरी निजी मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति को समर्पण एवं सरंक्षण की भावना रखना चाहिए। मैं यहां तक कहूंगा कि यदि आपको व्यक्तिगत रूप पुस्तक भी भेंट करता है तो अपनी भावनानुकूल राशि देनी चाहिए। एक साधु भगवन ने कहा "इससे ज्ञान की विरादना होता है (श्री धुरंधर विजय जी म.सा.) यदि निरादना हो तो आप पाप को बढ़ा रहे है वह कभी न कभी उदय भाव में आएगा।

वर्तमान तीर्थंकर की वाणी सुनाई नही देती, इसलिए पूजा करते समय हम ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि हम भी आप जैसे बने, इसीलिए भगवान की वाणी जो आकाश में सुरक्षित है वे भी प्रगट होगी और उनकी वाणी को आगम सूत्रों में दर्शित की गई है। उसको भगवान के प्रतिनिधी "आचार्य, ... उपाध्याय" द्वारा सुनाई जाती है, इसलिए हम कहते है कि जिन वाणी सुननी चाहिए जो वर्तमान में कम हो गया और स्वाध्याय तो हम बहुत कम लोग ही करते हैं।

इसलिए श्वेताम्बर समाज के प्रत्येक सदस्य को संकल्प लेना चाहिए कि उन्हें प्रतिदिन किसी भी शास्त्र को दो पृष्ठ प्रतिदिन पढ़ना चाहिए। इसलिए जैन धर्म की वास्वविकता को समझ सकेंगे। इस सम्बन्ध में यहा स्पष्ट करना चाहूँगा कि दिगम्बर समाज के सदस्य मंदिर में रखते हुए शास्त्र को अध्ययन करते हैं (पूजा करने के पश्चात्)

जैसा कि ऊपर वर्णन किया है कि समर्पण की भावना से चढ़ाया जाता है, वह सामग्री पुजारी को जाता है, यह भी एक प्रकार का दान है, इसी कारण कुछ मात्रा ही सही समर्पण (दान) हुआ तथा दर्शन का अभिप्राय विश्वास को होता है।

सम्यक् दर्शन का अर्थ भी यही विश्वास है। मूर्ति में विश्वास करने से यह मानते हैं कि जो मूर्ति स्थापित है। वह भी आपकी तरह मनुष्य थे उनके अवलम्बन से उनके गुण या ऊर्जा क्यों नहीं आ सकते। यदि आप

में सम्यक दर्शन की अभिलाषा है, विश्वास है तो सभी कार्य शुभ है और यदि सम्यर्क दर्शन नहीं है तो कितने ही तप कर कोई प्रयोजन है जैसे कामली तापस से 60000 हजार आयम्बिल की साधना की थी लेकिन उसके दर्शन का भाव नहीं होने से कोई प्रतिफल नहीं हुआ।

मेरे नाना के कोई पुत्र संतान नहीं थी तब उन्होंने मन्नत मांगी कि हे केसरियानाथ, यदि पुत्र होगा तो 5 वर्ष होने पर उसके तोल के बराबर केसर भेंट करेंगे।

अपने गांव लौटने के बाद कुछ दिनांक के अन्तराल में पुत्र की मृत्यु हो गई थी, नाना ने सोचा कि भगवान द्वारा दिया गया पुत्र के साथ ऐसा कैसे हो गया। विचार आने पर उन्होंने तीर्थस्थल पर जाकर अपने तरीके से जांच की और वास्तविकता का पता लगा कि पुजारी ने केसर अपने पास रख ली और उस समय में मुनि को कहा पुजारी को निकाला जाने लगा तो नाना ने इन्कार कर दिया और मेरे भाग्य में ऐसा ही था, इसको परेशान न करे।

2) मैं स्वयं बचपन में 6 माह तक नैत्र ज्योति से दुःखी था, मेरे पूज्य माता परेशान थी और पिताजी रोज कन्धे पर डॉ. के यहां ले जाते थे। माताजी ने केसरिया जी की मन्नत मांगी कि नैत्र ज्योति लौटने पर यह बाल कटवायेगी। ऐसा ही हुआ। मेरे सहपाठीगण अच्छे बनाकर आते तो मुझे बड़ा दुःख होता। एक दिन मैंने अच्छे बाल कटवाई तो उसी रात्रि को खून जैसे आँखे लाल हो गई और बाल में बड़ी–बड़ी जुएं हो गई। ऐसी परिस्थित पुनः बाल कटवाए और आंख का दर्द कम हुआ। केसरिया जी के क्योंकि सन् 1950 में लगाने के बाद ही बाल कटवाये और वर्तमान तक चालू है।

मंदिर क्यों बनाए जाते हैं ? जिसका वर्णन उपर उल्लेखित है । अब तीर्थ किसे कहते हैं ? तीर्थ वह है जो तारे वो तीर्थ है।

तीर्थ तीन प्रकार के हैं जिसका वर्णन पूर्व पुस्तकों में विवरण दिया है। ये मंदिर ही तीर्थ की परिभाषा में शामिल होते हैं। वे मंदिर जिनको निर्मित हुए एक सो वर्ष से अधिक हो जाते हैं वे तीर्थ हो जाते हैं (श्री राजेन्द्रसूरी जी म.सा.)

ये तीर्थ मनुष्य को ऊर्जा देने के लिए, मर्यादा में रहने के लिए तीर्थ होते हैं। भारत में जैन तीर्थ चारों ओर तीर्थ बने हुए हैं। तीर्थ रहने वाले को सुपाठ पढ़ाया, मर्यादित कराया। देश के साथ–साथ विदेशो में भी जैन तीर्थ है। जैसे श्रीलंका, नेपाल, कश्मीर, पाकिस्तान, चीन, ब्रह्मा, केलीफोर्निया आदि । यहां तक चीन, नेपाल में तीर्थकरों की संतानों ने राज किया ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

अमेरिका के वैज्ञानिक किधारा नाटा की संस्था द्वारा बताया गया है कि चन्द्रयान (चन्द्रलोक) के पास भी बहुत बड़ा भाग पृथ्वी का उपग्रह है, जहाँ पर भूतल के साथ वाष्प के कणों को देखा गया है और वहां का तापक्रम 40 डिग्री सेन्टीग्रेड पाया गया है। (जी न्यूज : 13.09.2019)

इसी संस्था (नाटा) ने अनुसंधान कर बताया है कि उनके द्वारा कई प्लेनेट को खोज करते हुए पाया कि एक जगह ऐसी भी है, जहाँ पर वर्तमान के भूभाग से 6 गुणा बड़ा भाग उपलब्ध है। (हिन्दुस्तान टाईम्स, दिल्ली माह जनवरी, 2020)

भौगोलिक वेत्ता के अनुसार प्राचीनकाल में 2/3 भाग समुद्र था ओर 1/3 भाग पृथ्वी था। उस समय जनसंख्या की स्थिति ऐसी थी कि करोड़ों की संख्या में लोग रहते थे। कैसा समय था, इससे स्पष्ट है कि उस समय के लोग चन्द्रलोक/अन्यग्रह के भाग में रहति थे जिसका वर्णन पूर्व प्रकाशित पुस्ताक में स्पष्ट किया गया है, अध्ययन की आवश्यकता है।

इन्होंने कहा कि जैन धर्म को Support करता हूँ और Support ही नहीं Practice भी करता हूँ। जैन धर्म पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। जैन धर्म की एक जीवन शैली है। अध्ययन से यह प्रमाणित है कि पृथ्वी का सबसे प्राचीन धर्म केवल जैन धर्म ही है। सभी वैज्ञानिक शोध ने यह मान लिया है कि जैन धर्म ही सबसे प्राचीन है। यहाँ तक बाल गंगाधर तिलक ने भी यह मान लिया था कि जैन धर्म सबसे प्राचीन है ओर वैदिक धर्म से पूर्व का है।

यह सबसे प्राचीन है इसका प्रमाण आज भी मिलते हैं जैसे सिन्ध घाटी की सभ्यता के खुदाई में, इथोपिया (दक्षिणी अमेरिका) की खुदाई में कई जैन धर्म की मूर्तियां व कला मिली है।

जैन धर्म सबसे प्राचीन व वैज्ञानिक है और जैन की पहचान क्या है इसके लिए उनका मानना है कि शाकाहारी होता है और शाकाहार पर विश्वास व वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित है। अपने विदेश भ्रमण के समय में इस विषय पर चर्चा की और उन्होंने स्वीकार की तथा इनके कार्यकाल में 50 वर्षों में लगभग 40–50 लोगों को शाकाहारी बनाया है जिसका उल्लेख ग्रीनिज बुक ऑफ वर्ल्ड तथा गोल्डन रिकॉर्ड में किया गया है।

विदेशों मे जाने पर वे पूछते है कि जैन की पहचान करने के लिए क्या आप शाकाहारी हो ? क्या व्यसन मुक्त हो ? क्या रात्रि में भोजन नहीं करते हो ? क्या पानी छानकर पीते है ? दूसरी पहचान यह है कि मनुष्य जो सत्य को मानता है, अहिंसा को मानता है अनेक अनेकान्तवाद व परिग्रह को मानता है, मनुष्य किसी भी जाति का हो अगर वह मन से इनको स्वीकार करता हे, पालन करता है वह जैन है।

जब जगदीशचन्द्र वसु ने यह प्रमाणित रूप से यह सिद्ध किया वनस्पति में भी जीव है। इस बात को

जैन धर्म पूर्व में सिद्ध किया है जैन शास्त्रों में पृथ्वीकाय, वायुकाय, अग्नि काय, जलवायु आदि जीव है। वैज्ञानिको ने इसको मान लिया और जलकाय को भी अभी स्वीकार नहीं किया, जल स्वयं जीव है इसको भी मान लेंगे।

संसार में कोई भी महामारी आदि है वह जानकारों के माध्यम से आदि है, वर्तमान में कोरोना की महामारी आई है वह भी जानवरों के माध्यम से ही आई है और इसका प्रभाव शाकाहारी होने की अवस्था से नहीं हो सकता यह बात अलग है कि कोई अन्य बीमारी के कारण प्रभाव पड़ा है।

जैन धर्म के अन्तिम केवली भद्रबाहू स्वामी ने अपनी पुस्तक में महामारी के बचाव के लिए जो बिन्दुओं का लगभग 2300 वर्ष पूर्व लिखे हैं वह आज WHO (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने बनाए है, वे ही 10 बिन्दु पूर्व में उल्लेखित है। इसके लिए जो भी वैक्सीन आएगी वह भी शाकाहारी होगी ऐसी मान्यता है।

जैन धर्म की वास्तुकला व चित्रकला

ये कला पूर्व में शेष रह गई थी वे इस प्रकार है :

1) श्री पार्श्वनाथ भगवान का मन्दिर कलकत्ता, जो आगरा के ताजमहल से अधिक सुंदर है।

2) श्री शीतलनाथ भगवान का मंदिर बेजोड़ चित्रकला का अनुपम उदाहरण है।

उक्त मन्दिर प्रयाग से 20 कि.मी. भदीनपुर नगर में स्थित है। इसकी प्रतिष्ठा फरवरी, 2020 में ललितकुमार नाटा द्वारा करवाई गई। इसको चार कल्याण मंदिर भी कहा जाता है।

पूर्व में निम्न मन्दिरों को चिन्हित नहीं किए गए :

1) श्री अहिच्छत्रा नगरी में पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं जो 2850 वर्ष प्राचीन है, यह संभव है कि प्रतिमा बाद की हो, मंदिर का जीर्णोद्धार हो

2) श्री मिथिला के मन्दिर व भगवान की प्रतिमाएं : श्री मलिनाथ भगवान का मन्दिर व प्रतिमा पूर्व मन्दिर जीर्णशीर्ण हो जाने से नूतन मंदिर का निर्माण कराश्री हरकलाचन्द जी ललितकुमार जी नाहर परिवार ने प्रतिष्ठा कराई। इनको अष्ट कल्याणक मन्दिर भी कहा जाता है।

3) पार्श्वनाथ शांतिनाथ मंदिर सांचौर जिला पाली राजस्थान में स्थित है। इसका जीर्णोद्धार सोने के पालिश द्वारा गया गया है इसलिए इसे स्वर्ण मन्दिर भी कहा जाता है।

4) एक फणा पार्श्वनार्थ सौराष्ट्र

5) नवग्रह मन्दिर (मुनिसुव्रत स्वामी का मन्दिर, आन्ध्रप्रदेश) : भदीनपुर शीतलनाथ का मंदिर, श्री मल्लीनाथ, श्री नमीनाथ भगवान का मंदिर, मैथीली नगर, श्री मुनिव्रत स्वामी का मंदिर, तमिलनाडू, सौराष्ट्र में पार्श्वनाथ का मंदिर, प्रवचन श्रुत तीर्थ शंखेश्वर जी

जैन धर्म में प्रत्येक तीर्थंकर परमात्मा के 5–5 कल्याणक होते हैं : च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष कल्याणक जिस स्थान पर कल्याणक होता है उस भूमि को कल्याणक भूमि कहते हैं। आज आपको उस कल्याणक तीर्थ की जानकारी दे रहे हैं जो अभी हाल तक विच्छेदित तीर्थ था। शास्त्रों की जानकारी व गुरूभगवंतों से चर्चा ओर परमात्मा के अधिष्ठायक देवों के चमत्कार के साथ यह विच्छेदित कल्याणक तीर्थ पुनर्स्थापित हुआ है। यह सब समाज रत्न, जिनशासन के प्रति समर्पित श्री ललित जी नाहटा द्वारा 27 वर्षों के अथक प्रयास से हुआ है। श्री ललित जी नाहटा की बहुत बहुत अनुमोदना प.पू. आचार्य श्री विनयसागर सूरीश्वर जी म.सा. की निश्रा में प्रतिष्ठाचार्य आचर्य श्री जिन पीयूषसागर सूरीश्वरजी म.सा. के हस्ते इस तीर्थ की पुर्नस्थापना प्रतिष्ठा 1 फरवरी, 2020 को हुई।

आज हम श्री मिथिला तीर्थ (सीतमढी बिहार) जो नेपाल की सीमा पर स्थित है। जहाँ 19वें तीर्थंकर परमात्मा श्री मल्लिनाथ जी एवं 21 वें तीर्थंकर परमात्मा श्री नमिनाथ जी के 4–4 कल्याणक (च्यवन जन्म दीक्षा, केवल ज्ञान कल्याणक) हुए, अर्थात् यह 8 कल्याणक भूमि है। यहीं पर महासती माता सीता का जन्म हुआ था, इसलिए इस जगह का नाम सीतामढ़ी पड़ा। यहाँ विशाल जिनालय के ही धर्मशाला और भोजनालय उपाश्रय भी बनाया गया है।

यह तीर्थ श्री भद्दिलपुर तीर्थ गाँव भोंदल, हन्टरगंज, चतरा, झारखंड में स्थित है। जहाँ 10वें तीर्थंकर परमात्मा श्री शीतलनाथ जी के 4 कल्याणक (च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान कल्याणक) हुए। यह तीर्थ भगवान बुद्ध की नगरी गया (बिहार) से 35 कि.मी. की दूरी पर है।

श्री अहिच्छत्रा तीर्थ 23वें तीर्थंकर परमात्मा श्री पार्श्वनाथ भगवान की कमठ उपसर्ग भूमि है, जहाँ श्री धरणेन्द्र देव व पदवामती माता सशरीर 2850 वर्ष पूर्व प्रकट हुए। करीब सौ वर्षों तक विच्छेदित रहने के बाद में इसकी पुर्नस्थापना प्रतिष्ठा 13 मई, 2005 को हुई। यहाँ उत्तर भारत के सबसे विशाल तीन मंजिले जिनालय के साथ ही धर्मशाला, भोजनशाला और उपाश्रय भी बना हुआ है।

(कैलाश जैन तीर्थों में भी माना जाता है, यह सिद्ध क्षेत्र है। यहाँ से आदिनाथ स्वामी मोक्ष को प्राप्त हुए है। यह कसौटी पत्थर से बना हुआ है।

प्रस्तुति : **जैन सोहनलाल सुराणा**

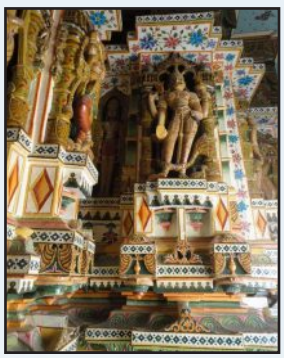

कलात्मक जैन मंदिर

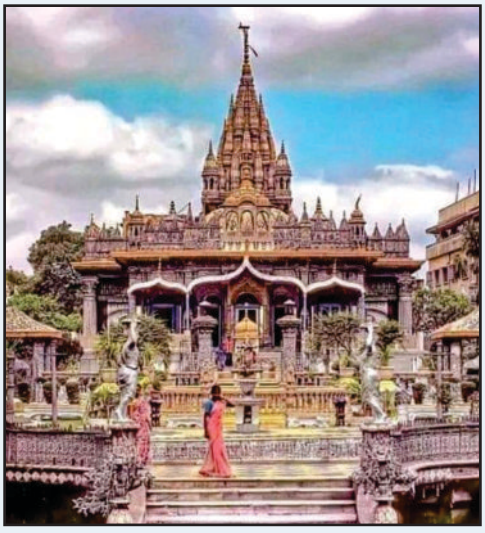

श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर, कलकत्ता

यह मंदिर 1867 में निर्मित है,
क्या यह मंदिर ताजमहल से कम सुन्दर है।

श्री एकफणा पार्श्वनाथ जैन मंदिर

श्री मून्द्रा तीर्थ (गुजरात)

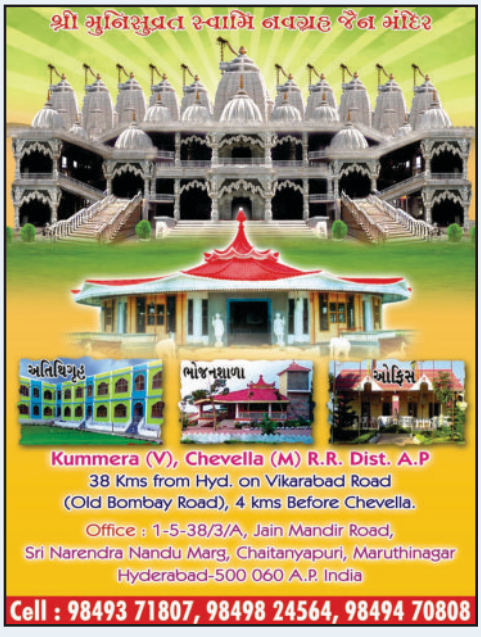

श्री मुनिसुव्रत स्वामी नवग्रह जैन मंदिर

Kummera (V), Chevella (M) R.R. Distt. A.AP.

श्री प्रवचनश्रुत तीर्थ, शंखेश्वर (गुजरात)

जैन धर्म पर अन्य विद्वानों के मत

1) आज मैं पहली बार जैसलमेर आया और मन्दिर भी देखने गया। वहां का पत्थर का काम और मूर्तिया बहुत सुन्दर है और पुराने ताड़पत्र पर लिखी हुई पुस्तकें बहुत सारी है। इस बात की आवश्यकता मालूम होती है कि इन सबकी सटीक जांच की जाए। जैसलमेर की ओर हमारा अधिक ध्यान होना चाहिए।

21.03.1948

द : जवाहरलाल नेहरू
(प्रधानमंत्री : भारत)

---

2) Another windedr of the world Jerusalem

Israil
Dr. A.Y, Goor
(खाद्य एवं कृषि विशेषज्ञ–संयुक्त राष्ट्रसंघ)

---

3) In the beautiful Jaisalmer there is a special jewel, the Jain Temples with the most extras ordinary and valuable library. I am very thankful of having been able to see all these beauties.

F. Baner (From Switzerland)

---

4) जैसलमेर में जैन ग्रन्थागार देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। जिस तरह प्राचीन ग्रन्थों को सुरक्षित रखने का प्रयत्न जैनों ने यहां किया है ह देखने ही योग्य है। इनकी सूची भी बनाई गई है और अब छप रही है। इनमें से अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन भी आवश्यक है ओर होना चाहिये। जैन साहित्य बहुत बड़ा और उत्कृष्ट है। बहुत ग्रन्थ अप्रकाशित है। प्राकृट टेक्स्ट सोसायटी इनके ही प्रकाशन का काम कर रही है। आशा है यहां के ग्रन्थों की ओर भी उसका ध्यान अवश्य जायेगा। पत्थर की कारीगरी भी बहुत सुन्दर है।

31.03.1955

द. राजेन्द्र प्रसाद
(राष्ट्रपति भारत)

5) जैन मन्दिर की कलापूर्ण मूर्तियों का सौन्दर्य और ताड़पत्रों की पुस्तकों की प्राचीनता जैसलमेर को आकर्षित बनाती है।

31.03.1954

द. जयनारायण व्यास
मुख्यमंत्री राजस्थान

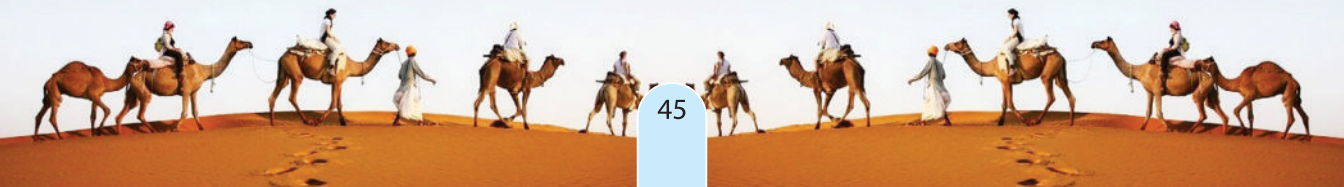

6) जैसलमेर के जैन मन्दिरों को देखने का आज सौभाग्य मिला। बड़ी प्राचीन तथा सुन्दर मूर्तियां है और मन्दिर भी सुन्दर है। इस मन्दिर की विशेषता प्राचीन ग्रन्थों का इसका संग्रहालय है हाल में ही जैन .... मुनियों के प्रयत्न से संग्रहालय के ग्रन्थों की सूची ..... की गई है और उनकी सुरक्षा का प्रबन्ध किया गया ..... करता हूँ कि राजस्थान सरकार तथा भारत सरकार ..... . इस मंदिर तथा इसके ज्ञान भण्डार कीतरफ विशेष रूप से जायेगा। यों तो सारे जैसलमेर की तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

31.10.1955

द. जयप्रकाश नारायण

---

7) प्राचीन जैन मन्दिर की शिल्पकला और यहां सुरक्षित हस्तलिखित ग्रन्थों का कोष देखकर भारतीय संस्कृति का गौरव पूर्ण युग स्मरण हो आता है। आशा ग्रन्थागार की सभी पुस्तकें शीघ्र ही जन साधारण के उपयोग के हेतु प्रकाशित हो सकेगी। मुझे जैसलमेर के ऐतिहासिक नगर में इस उच्चत्तम कला, सौन्दर्य और ज्ञान के भण्डार को देखकर अत्यन्त हर्ष हुआ।

31.01.1956

द. सतीशचन्द्र
उपमंत्री–भारत सरकार

---

8) Translation of Dutch in English

I am very glad having had the opportunity of visiting the fot and its temples which were beth very beautiful.

J. Gshvis
Food & Agricultural organsation of the United Nation

---

9) English Transaction of the Russian Text

We are very glad to have the privilege of getting accentuate with the architecture and ..... of India their five seculptures impress by thier perfectness. We shall always remember this Jain Temple.

(1) Subhotina (2) Tatarsky (3) Zumbioves (4) Vassilenko (5) Mehedioholly (6) Ossizav

17.02.1958

T.C.M. Experts
U.S.A.

---

10) It was a great pleasure to visit the temples is the Jaisalmer Fort famous for their exquisite and the ..... carvings of great antiquity. The temple library has ..... unique manuscripts and rare lacquet work and other paintings of pre Moghul ers, which arewell preserved and should be great interest to the research scholar.

I hope detailed and illustrated caralogues of their works will be prepared and published so that these valuable art treasures that depict the glory of our past may be more widely known and appreciated

Gurumukh Nihal Singh
Governor, Rajasthan

---

12)Very grateful for havin gbeen shown one of the bistorical treasures of India-The Library of Jains.

12.02.1961

Minster Counsellor, German Embassy, New Delhi

---

13)It is a privilege to see this great library and to reflect on its age and its importance for learning.

05.02.1961

Professor University Chicago Academy of Sciences, U.S.A.

14)A most interesting visit. It was especially good to see the care being taken of the great amount of historical documents in order that they should be preserved for the future.

15.09.1967

Thomas H. Day.
P.A.O. of the United Nations

---

15) आज म्हारा पुण्ययोगे जैसलमेर तीर्थना गगनचुम्बी कलापूर्ण मन्दिरोना दर्शन करब नुं अहोभान्य सांपड्युं। दर्शनकरी मन हर्षान्वित वयुं। वली कलापूर्ण आगम ग्रन्थो तेमज युगप्रधान आचार्यदेव श्री जिनदत्तसूरिजीना अग्नि संस्कार प्रसंगे सुरक्षित रहेल चोलपट्टी मुहपति आदि प्राचीन वस्तुओना पण अलभ्य दर्शन श्रया आवी कलापूर्ण कृतियों ने सुरक्षित साखी सरेखर भावों प्रजा उपर उपकार कयों छे।

12.12.1967

जैसींगलाल नागरदास काह मेता

---

3) दुनिया का अनन्त रहस्य उसकी समझदारी है। सच्चा धर्म बुद्धिमानी के इस तत्व को जकड़ता है और विचार ओर कर्म की एक प्रणाली बनाता है जिससे सच्चा सद्भाव और आनंद आता है। और ऐसा वास्तव में जैन धर्म के साथ है।

अल्बर्ट आइंस्टीन

---

4) यदि आपको भारतीय संस्कृति की सच्ची झलक देखनी है तो जल पीने के लिए लोटा और खाने के लिए सत्तू ले लो और मरुधरा के जैन ग्रंथागारों को छान डालो।

राहुल सांकृत्यायन

---

5) भारतीय भाषाओं के इतिहास की दृष्टि में भी जैन पांडुलिपी साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है।

विंटरनिटत्स

---

6) केवल मैं ही नहीं, सारा राष्ट्र जैन है क्योंकि हमारा राष्ट्र अहिंसावादी है और जैन धर्म अहिंसा पर विश्वास रखता है। जैन धर्म के आदर्श के रास्ते को हम नहीं छोड़ेगे।

श्रीमती इन्द्रा गांधी

पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार

---

7) मैं जैन धर्म के सिद्धांतों को बहुत मानता हूँ, कि मैं जैन समुदाय में पुनर्जन्म लेना चाहता हूँ।

जॉर्ज बनार्ड शॉ

---

9) मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर पर जो चिन्ह अंकित है वह भगवान ;षभदेव का है। यह चिन्ह इस बात का द्योतक है कि आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व योग साधना भारत में प्रचलित थी और उसके प्रवर्तक जैन धर्म के आदि तीर्थंकर ;षभदेव थे। सिंधु निवासी अन्य देवताओं के साथ ऋषभदेव की पूजा करते थे।

इतिहासकार डॉ. एम.एल. शर्मा

---

13) हड़प्पा की कायोत्सर्ग मुद्रा में उत्कीर्णित मूर्ति पूर्ण रूप से जैन मूर्ति है, उनके मुख पर जैन धर्म का साम्य भाव दूर से झलकता है।

टी.एन. रामचन्द्रन, हड़प एण्ड जैनिज्म, निदेशक केन्द्रीय पुरात्व विभाग